चाणक्य विशेषांक

दिव्य प्रेम सेवा मिशन द्वारा प्रकाशित

सेवा जयोति

सेवा क्षेत्र को समर्पित, अध्यात्म प्रेरित, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पत्रिका

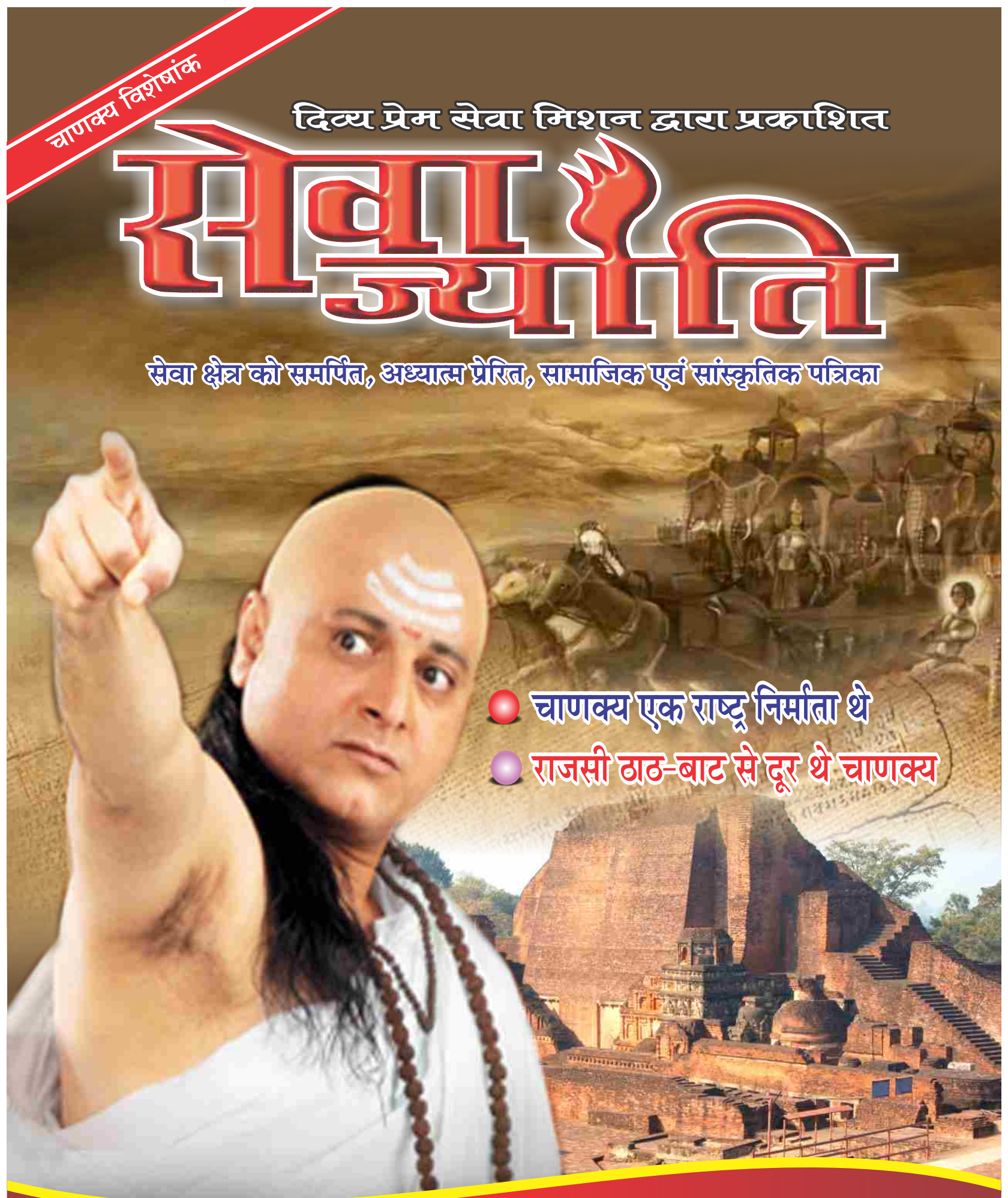

- चाणक्य एक राष्ट्र निर्माता थे
- राजसी ठाठ-बाट से दूर थे चाणक्य

वर्ष-1 • अंक-1 • जुलाई-सितम्बर 17 • श्रावण-आश्विन • विक्रमी संवत्-2074

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

प्रवेश प्रारम्भ

MASTER DEGREE COURSES

MBA (English), LL.M., MSW, M.Com.,
M.A. (Yoga), M.A. (in all subject),
M. A. (Mass Comm.),
Master of Tourism Management (MTM)

BACHELOR DEGREE COURSE

BBA, B.Com, B.A. (18 Elective Subjects),
B.A. (Single Subject-Sanskrit or Urdu)
B. A. (Yoga & Naturopathy)
BCA, Tourism Studies

दूरस्थ शिक्षा के लाभ

- घर या कार्यक्षेत्र की व्यस्तता के बावजूद शिक्षा प्राप्त करना।
- पारम्परिक शिक्षाविधि से अलग तथा विस्तारित समयावधि में अपनी सुविधा और गति के अनुसार शिक्षा प्राप्त करना।
- सरल सुबोध एवं सुरुचिपूर्ण शैली में लिखित बोधगम्य पाठ्य सामग्री प्राप्त कर उपलब्ध समय में ही अध्ययन पूर्ण करना।
- अन्य विश्वविद्यालयों से औपचारिक शिक्षा प्राप्त कर रहे अभ्यर्थियों के लिए भी विभिन्न अतिरिक्त पाठ्यक्रमों में शिक्षा प्राप्ति के अवसर उपलब्ध होना।
- पुस्तकें नि:शुल्क।

DIPLOMA COURSES

- Yoga & Naturopathy .
- Food Nutrition (DPHCN)
- Panchkarma
- Phalit Jyotish (DPJ)
- Front Office.
- Tourism Studies

POST GRADUATION DIPLOMA COURSES

- Tourism
- Journalism & Mass Communication
- Human Resources/Marketing
- Disaster Management
- Cyber Law

CERTIFICATE COURSES

- Office Management
- Ayurvedic Masseur
- Vedic Karamkand
- Yogic Science
- Naturopathy
- Phalit Jyotish

स्वामी विवेकानन्द इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट

डिवाईन इन्टरनेशनल फाउण्डेशन

द्वितीय तल, श्री सांई कॉम्पलैक्स, निकट एचडीएफसी बैंक, पुराना रानीपुर मोड़, हरिद्वार

सम्पर्क : 01334-221162, 9359535464, 9219692776

दिव्य प्रेम सेवा मिशन
सेवा साधना के 21 वर्ष

सेवा ज्योति

सेवा क्षेत्र को समर्पित, अध्यात्म प्रेरित, सामाजिक एवं सांस्कृतिक त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष : 1, अंक : 1
जुलाई–सितम्बर 2017
श्रावण–आश्विन
विक्रमी संवत् : 2074
मूल्य प्रति : ₹ 15.00

मुख्य सम्पादक
आशीष गौतम

सम्पादक
संजय चतुर्वेदी

प्रबन्धन
आचार्य बालकृष्ण शास्त्री

विज्ञापन प्रभारी
पंकज सिंह चौहान

आवरण सज्जा
निकुंज

सम्पादकीय कार्यालय
दिव्य प्रेम सेवा मिशन
सेवाकुंज, चण्डीघाट
पो0 कनखल, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
पिन कोड – 249408
फोन नं0 – 01334–222211
E-mail : sewa_jyoti@yahoo.com

ड्राफ्ट/चैक 'सेवा ज्योति' हरिद्वार के नाम देय हो।

प्रसार एवं वितरण सम्बन्धी जानकारी हेतु
मो0 9219595552

स्तम्भ	विषय	पृष्ठ सं.
परिसर में आए अतिथियों के उद्गार		4
सम्पादकीय	चाणक्य की राजनीतिक चिंतन–धारा की आवश्यकता	5
पत्र	अपनों से अपनी बात	6
अंक विशेष	चाणक्य एक राष्ट्र निर्माता थे	7
''	चाणक्य नीति अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के संदर्भ में	9
''	राजसी ठाट–बाट से दूर थे चाणक्य	11
''	चाणक्य	13
साक्षात्कार	न तो नाटक कभी मरा और न ही रंगमंच : मनोज जोशी	15
समाचार पत्रों से....	मरहम पट्टी, पढ़ाई और परवरिश का मिशन	18
अध्यात्म	संसार रूपी भव सागर को पार करने वाला रथ ''धर्मरथ''	20
समाचार परिक्रमा	दिव्य प्रेम सेवा मिशन द्वारा चाणक्य नाटक का आयोजन	22
''	उपेक्षित वर्ग की सेवा कर रहा है सेवा मिशन : धन सिंह रावत	28
''	''राष्ट्रपुरूष चन्द्र शेखर–संसद में दो टूक'' पुस्तक भेंट की	29
''	आशीष जी ने किया प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि केन्द्र का शुभारम्भ	30
''	पौधारोपण कर अनिल माधव दवे को दी श्रद्धांजलि	31
''	हमारी पुरानी परम्पराओं का प्रकृति संरक्षण में बहुत योगदान है	32
''	अप्राप्य को प्राप्त करने का उपाय है योग : राजा भैया	33

www.divyaprem.co.in

/divyapremsewamissionharidwar @DivyaPremSewa Divya Prem Sewa Mission @divyapremsewamission

दिव्य प्रेम सेवा मिशन न्यास के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक संजय चतुर्वेदी द्वारा दि हिन्दुस्तान ऑफसैट प्रिन्टर्स, आर्यनगर, ज्वालापुर हरिद्वार से मुद्रित तथा दिव्य प्रेम सेवा मिशन, सेवाकुंज, चण्डीघाट, पो.-कनखल, हरिद्वार-249408 (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित

परिसर में आए अतिथियों के उद्‌गार

वन्देमातरम् कुंज एक ऐसा अद्‌भुत, मनोरम, अनुशासित परिसर है। जहाँ आने की सदैव इच्छा रहेगी। यहाँ के बच्चों का अनुशासन संस्कार, शिक्षा, सेवा, सहयोग सभी प्रशंसनीय है। ईश्वर सदैव ऐसी ही सद्‌प्रेरणा बनाये रखे और मुझे बार-बार यहाँ आने का अवसर प्रदान करे। परिसर के सभी बन्धुओं को धन्यवाद।

-मुकेश कुमार सिंह, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, सुलतानपुर

यहाँ आकर लगा कि ईश्वर सब जगह विद्यमान है। प्रभु की कृपा से यहाँ बहुत ही पुण्य कार्य हो रहा है। उपस्थित जन समुदाय अपनी नि:स्वार्थ सेवा देकर समाज के समक्ष अच्छा उदाहरण देकर लोगों को इस कार्य के प्रति प्रेरणा दे रहे हैं।

-उदयराज जायसवाल, सचिवालय कालोनी, लखनऊ

आप का कार्य सराहनीय है खास कर बालकों के साथ-साथ बालिकाओं के लिए जिस कार्य का प्रारम्भ किया गया है वह अत्यंत ही प्रेरणादायी है। मेरी ओर से इस संस्था को अनन्त शुभकामनाएं हैं। आप अपने इस पवित्र व महान कार्य में सफल हों ऐसी कामना ईश्वर से करती हूँ।

-निशा मिश्रा, सहायक नगर आयुक्त, बरेली

दिव्य प्रेम सेवा मिशन द्वारा अति सराहनीय कार्य किया जा रहा है। ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ ऐसा सत्‌कार्य एवं पुरुषार्थ करने की प्रेरणा यहाँ से अधिकाधिक प्रसारित हो। यहाँ के कार्यकर्ता विनम्र हैं एवं उत्तम कार्य कर रहे हैं। इनका कोटि-कोटि धन्यवाद।

-सुखपाल सिंह राना, लोधी रोड, नई दिल्ली

''मन समर्पित तन समर्पित चाहता हूँ इस मिशन को कुछ और भी दूँ।''

इस भावना के साथ यहाँ से जुड़े हुए प्रत्येक कार्यकर्ता एवं सहयोगी को मैं नमन करता हूँ और अपने आप को इस आश्रम का एक छोटा साथी बनने का संकल्प और विश्वास लिए जब भी अवसर मिलेगा मैं इस आहुति यज्ञ में अपने आप को जोड़कर ईश्वर का शुक्रिया अदा करूँगा। जय हिन्द-जय भारत।

-सुधीर शाण्डिल्य, दिल्ली

अगर भारतीय संस्कृति और सभ्यता की छटा देखने को मिलती है तो वह वन्दे मातरम् कुंज है। यहाँ जिस प्रकार बालकों की शिक्षा, स्वच्छता, खेल इत्यादि का प्रबन्ध किया गया है वह अतुलनीय है। मुझे देखकर गर्व होता है कि ऐसी संस्थाएं ही हमारे महान भारत देश का गौरव बढ़ाती हैं।

-गगन ओबेरॉय, नई दिल्ली

An excellent place of complete devotion and dedication for sevice of society. Great work is being done by the team.

-NISHA SOBTI, New Delhi

Very nice place, nice work done by organization, after meeting children, felt really good. Children are well disciplined, hope that organization will keep up the good works for these children.

-ANSHU DEVVRAT, Haridwar

The best thing we can do in life is serving humanity. Compassion & Love are first step to spirituality, I must appreciate Ashish Bhaiya for this nobel effort. I wish I can be a part of this beautiful mission. Love and Blessings to all the kids.

-ALANKRITAMANVI, Faridabad

Feeling really happy to see the efforts and arrangements. My heart is full of joy and we would like to support and help for extra education and selfdevelopment works.

-POONAM VERMA, Rishikesh

कृपया पत्र के द्वारा अपनी प्रतिक्रिया से हमें जरूर अवगत कराएं। आप अपनी प्रतिक्रिया sewa_jyoti@yahoo.com पर भी भेज सकते हैं। अपनी प्रतिक्रिया व सुझाव इस पते पर भेजें:

दिव्य प्रेम सेवा मिशन, सेवाकुंज, चण्डीघाट
पो. कनखल, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) पिन कोड-249408
फोन नं. - 01334-222211

सम्पादकीय

चाणक्य की राजनीतिक चिंतन-धारा की आवश्यकता

आचार्य चाणक्य के नाम से प्राय: हर भारतवासी परिचित होगा। उन्होंने जीवन भर जो कहा, वह इतिहास बन गया। उनके कथन मिशाल बन गये। उनके कथन जितने प्रासंगिक उनके समय में थे, आज भी हैं। एक-एक कथन कठोर अनुभवों की कसौटी पर कसा खरे सोने जैसा है। उन्हें अवसर के अनुरूप हर प्रकार की नीति अपना सकने वाले एक अतिसफल राजनीतिज्ञ के तौर पर जाना जाता है। उनका काल चौथी सदी ईसवी पूर्व बताया जाता है। वे तत्कालीन यूनानी शासक, सिकंदर महान, के समकालीन थे, जो उनकी सूझबूझ के कारण भारत पर अपने आक्रमण में सफल नहीं हो सका था। चाणक्य अनोखे, अद्‌भुत, निराले, ऐसे राजनीतिज्ञ थे कि उन्होंने मगध के तत्कालीन राज्यासीन नंदवंश का उन्मूलन करके मौर्य साम्राज्य की संस्थापना की थी और चंद्रगुप्त मौर्य का राज्याभिषेक किया था। यह वह समय था जब मौर्यकाल के प्रथम सिंहासनारूढ़ चन्द्रगुप्त मौर्य शासक थे, उस समय चाणक्य राजनीतिक गुरू थे। वह स्वभाव से अभिमानी, चारित्रिक एवं विषय दोषों से रहित स्वरूप से कुरूप, बुद्धि से तीक्ष्ण, इरादे के पक्के, प्रतिभा के धनी, युगद्रष्टा एवं युगस्रष्टा थे। आज भी कुशल राजनीति विशारद को चाणक्य की संज्ञा दी जाती है। चाणक्य ने संगठित, सम्पूर्ण आर्यावर्त का स्वप्न देखा था तदानुरूप उन्होंने सफल प्रयास किया था।

चाणक्य का जीवन अनेक विसंगतियों से जूझता हुआ आगे बढ़ता है। कुछ लोग सोच सकते हैं कि उनका जीवन दर्शन प्रतिशोध लेने की प्रेरणा देता है, लेकिन चाणक्य का प्रतिशोध निजी प्रतिशोध न होकर सार्वजनिक कल्याण के लिए था। उन्होंने जनता के दु:ख दर्द को देखा और स्वयं सहा था। उसी की याचना लेकर वह राजा से मिले थे। घनानन्द प्रजा का हितैषी नहीं था, इसलिए चाणक्य ने उसके नाश का प्रण किया।

चाणक्य का असली नाम परिवार द्वारा परंपरानुसार प्रदत्त विष्णुगुप्त बताया जाता है। उनको चाणक्य नाम अपने पिता चणक के कारण मिला था। कुछ लोगों का मानना है कि अत्यंत कुशाग्र बुद्धि होने के कारण वह चाणक्य कहलाए। प्राचीन काल में व्यक्ति को माता-पिता या परिवार पर आधारित नाम से भी पुकारने की परंपरा रही है। एक कुटिल राजनीतिज्ञ के नाते उन्हें कौटिल्य नाम से भी जाना जाता है। कौटिल्य अर्थशास्त्र उनकी ही एक रचना है, जिसमें उन्होंने सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक विषयों से संबद्ध विचारों का संकलन किया है। उन्होंने कहा है- **प्रजासुखे सुखं राज्ञ: प्रजानां च हिते हितम्। नात्मप्रियं हितं राज्ञ: प्रजानां तु प्रियं हितम् ।।** प्रजा के सुख में राजा का सुख निहित है अर्थात् जब प्रजा सुखी अनुभव करे तभी राजा को संतोष करना चाहिए। प्रजा का हित ही राजा का वास्तविक हित है। वैयक्तिक स्तर पर राजा को जो अच्छा लगे उसमें उसे अपना हित नहीं देखना चाहिए, बल्कि प्रजा को जो ठीक लगे, यानी जिसके हितकर होने का प्रजा अनुमोदन करे, उसे ही राजा अपना हित समझे। पाटलिपुत्र में जब उनका सामना राजा घनानन्द से हुआ तो उन्होंने स्पष्ट शब्दों में जनता के कष्ट और राजा की बुराइयों को सामने रखा। चापलूसी पसंद राजा घनानन्द को यह सब नागबार गुजरा। उनकी शक्ल भी घनानन्द को पसंद नहीं आई और उसने उन्हें राजमहल से बाहर निकलवा दिया। तब चाणक्य ने नंद वंश का समूल नाश करने की शपथ ली, जिसे चन्द्रगुप्त की सहायता से पूरा भी किया। चाणक्य ने चन्द्रगुप्त और बाद में उनके पुत्र बिन्दुसार के मन्त्री एवं विशेष सलाहकार के रूप में काम किया। वे बिन्दुसार के एक मन्त्री सुबन्धु के हाथों धोखे से मारे गये। लेकिन उनके विचारों को कोई नहीं मार सकता। उनके विचार मानव युग के अवसान तक हमारा पथ-प्रदर्शन करते रहेंगे।

आज के स्वार्थपूरित, अज्ञानान्धकार में डूबे शुद्ध स्वार्थी राजनीतिक परिदृश्य में मात्र चाणक्य का ज्ञानामृत ही भारत का पथ-प्रदर्शक बनने की क्षमता रखता है। वही हमें राजनीतिक, सामाजिक, मुक्ति का मार्ग दिखा सकता है। आज अहंकारी विद्या का ही बोलवाला है। सांस्कृतिक स्वरूप ध्वंस हो चुका है। निष्काम सेवा भाव का दिवाला निकल चुका है। आज चाणक्य की राजनीतिक चिंतन-धारा को समाविष्ट करके ही राष्ट्र का उद्धार हो सकता है। 'सेवा ज्योति' के इस विशेषांक के माध्यम से चाणक्य के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास है।

संजय चतुर्वेदी

अपनों से अपनी बात

प्रिय बन्धु/भगिनी,

विनम्र प्रणाम।

हृदय से हृदय, परिवार से परिवार जोड़ने वाली सेवा संस्कृति के विकास हेतु दिव्य प्रेम सेवा मिशन की स्थापना 21 वर्ष पूर्व भगवत् प्रेरणा से 12 जनवरी 1997 स्वामी विवेकानन्द जयन्ती के पावन अवसर पर हुई थी। सामान्य फूस की झोपड़ी से आरम्भ हुआ बच्चों के पालन-पोषण के केन्द्र सेवाकुंज एवं वन्दे मातरम् कुंज के रूप में विकसित हैं। सेवाभावी, संवेदनशील, समझदार, अपने दायित्वों को पहचानने वाले, समझने वाले 21 हजार परिवारों का एक संकुल निर्माण कराया जाये, गत 23 अक्टूबर 2016 को राष्ट्रीय ध्वज स्थापना समारोह के अवसर पर देशभर से पधारे प्रतिनिधियों ने यह संकल्प व्यक्त किया था। विगत आठ महीनों में आप सबकी संवेदनशील सक्रिय भूमिका ने सेवा मिशन से पांच हजार सदस्य जोड़ने का लक्ष्य प्राप्त कर लिया है।

अभी तक गोरखपुर, बस्ती, फैजाबाद, वाराणसी, लखनऊ, कानपुर, इलाहाबाद, फर्रूखाबाद, नोएडा, गाजियाबाद, दिल्ली, मुरादाबाद, ग्वालियर और मुम्बई में सेवा मिशन की सक्रिय इकाईयां हैं, इसी प्रकार देश भर में 21 सक्रिय इकाईयों के निर्माण का लक्ष्य है। आप सभी सेवा मिशन के प्रति समर्पित कार्यकर्ताओं से हमारा विनम्र निवेदन है कि आगामी 31 दिसम्बर 2017 तक अपने द्वारा संकल्पित लक्ष्य को पूर्ण करेंगे।

इसी विनम्र निवेदन के साथ।

आप का अपना-

आशीष

आशीष गौतम
अध्यक्ष
दिव्य प्रेम सेवा मिशन

अंक-विशेष

चाणक्य एक राष्ट्र निर्माता थे

-जवाहरलाल कौल
पद्मश्री

चाणक्य को याद करते ही चंद्रगुप्त मौर्य की याद आना स्वाभाविक है। चाणक्य के बिना चद्रगुप्त शायद होते ही नहीं। हर साम्राज्य के निर्माण के पीछे एक योजना होती है जिस में उस का प्रतिरूप तैयार होता है और उस का मार्ग निर्देशित करती है। बिना किसी पूर्व आयोजन के छोटी-मोटी जीत तो प्राप्त की जा सकती है लेकिन विविधिताओं भरे और अनेक स्वतंत्र जनपदों में बंटे देश को एक ही साम्राज्य में नहीं बांधा जा सकता है। यही बात किसी मूल भूत बदलाव या राजनैतिक क्रांति के लिए भी सच है। किसी की व्यक्तिगत आकांक्षा भर से ही क्रांतियां नहीं आतीं, कायाकल्प नहीं होते। क्रांति हर छोटी सीमा को तोड़ देती है या उसे विशाल में समाहित करती है। अनेक लघु इकाइयों को एक विशाल सत्ता में बदलने के लिए आवश्यक है कि कोई विचारधारा हो, कोई लक्ष्य हो जो स्थानीय भेदभाव के बावजूद साथ आने को प्रेरित करे, तो ही क्रांति आकार लेती है।

चाणक्य ने तो दोनों ही लक्ष्य प्राप्त कर लिए, निराशा और कमजोर राष्ट्र में नई जान फूंक कर उस में एक नई क्रांति लाये और एक ऐसा साम्राज्य खड़ा कर दिया जिस ने हमारे इतिहास की दिशा ही बदल दी। जब चाणक्य गुरुकुल छोड़ कर पाटलीपुत्र आए तो देश विदेशी आक्रांताओं से त्रस्त था। यूनानी आक्रमण के बावजूद भारतीय राजाओं में कोई एकता नहीं बनी थी, क्योंकि उन्हें पहली बार ऐसे आक्रमण का सामना करना पड़ा जिस के सामने अलग-अलग सब नतमस्तक हो गए। इस से पहले किसी विदेशी ने भारत पर ऐसा आक्रमण नहीं किया था जिस का देशव्यापी परिणाम होता। कभी तिब्बती, कभी ईरानी और कभी चीनी आक्रमण तो होते रहे लेकिन उन की मार केवल सीमावर्ती जनपदों को ही सहनी पड़ती थी। देश के भीतरी क्षेत्रों तक वे नही पहुंच पाते थे।

तिब्बत और चीन का हस्तक्षेप सीमावर्ती पहाड़ी राज्यों, कश्मीर, उत्तरी हिमालयी राज्यों तक ही रहता था और ईरानियों का अतिक्रमण उत्तर पश्चिमी क्षेत्रों तक ही सीमित था। पहली बार कुरोश यानी साइरस ने उत्तर पश्चिम की ओर सिंध तक धावा बोला और सिंधु नदी के मुहाने तक पहुँच गया। लेकिन उस ने भी मद्य देश, पश्चिमी और दक्षिणी भारत तक जाने का प्रयास नहीं किया। वास्तव में यूनान के सिकंदर ने ही इस इरादे से आक्रमण किया था कि वह सारे भारत को अपने राज्य में मिलाए। वह ऐसा नहीं कर पाया लेकिन उस के आक्रमण से देश में अफरा तफरी पैदा हो गई। ऐसे आक्रमण के लिए भारतीय राजा तैयार नहीं थे। पूरे देश की रक्षा की व्यवस्था किए बिना अपने छोटे से राज्य की रक्षा करना भी संभव नहीं यह बात उन की कल्पना में नहीं थी।

चाणक्य ही एक ऐसा दूर दृष्टा था जिस ने इस तथ्य को जान लिया था और भारत वर्ष को केवल सांस्कृतिक इकाई ही नहीं मान कर चला, एक राजनैतिक इकाई भी बनाने की आवश्यकता महसूस कर ली थी।

राजनीति में अखिल भारतीय दृष्टि कोण का विकास करने का दायित्त्व चाणक्य को ही जाता है क्यों कि उस से पहले न तो इतने बड़े देश में केंद्रीय शासन व्यवस्था की आवश्यकता थी और न ही इस का किसी ने प्रयास ही किया था। महाराजा रघु की दिग्विजय का वर्णन हम ने सुना है। उन की सेनाएं आधुनिक अफगानिस्तान को पार कर के ईरान होते हुए वापस तिब्बत से लौटी थी, जहाँ उन का स्वागत गंगा की शीतल जल की बूंदों ने किया था। लेकिन दिग्विजय केवल आधिपत्य स्थापित करने का साधन था, राजा दूसरे देशों को अपने राज्य में नहीं मिलाते थे। उन युग में संभवत: इतने व्यापक भूभाग पर शासन करना आसान भी नहीं था। यातायात की गम्भीर समस्याएं थीं। भारत की सीमाओं के अंदर भी बड़े-बड़े सम्राटों की अधीनता आसपास के राजा तो स्वीकार कर लेते थे, लेकिन स्थानीय शासन वहीं के राजा को लौटाया जाता था, या उस के स्थान पर किसी और को राजा बनाया जाता था। पहली बार चंद्रगुप्त मौर्य ने एक ऐसा राज्य स्थापित किया जिस का प्रत्यक्ष शासन पूर्वी भारत से उत्तरी और पश्चिमी भारत के राज्यों पर भी था। स्वाभाविक था कि ऐसे राज्य के शासन के लिए, उस की सुरक्षा और अर्थ व्यवस्था के लिए जो नीति निर्धारक नियम बनाए जाते वे भी व्यापक महत्त्व के और विविध आयामों के होते। चाणक्य ने अपनी पुस्तक अर्थ शास्त्र में जिस व्यौरेवार ढंग से राज्य के शासन के लिए आवश्यक कामों का वर्गीकरण किया है और सुरक्षा के समरनैतिक नियमों को समझाया है, आज जिसे पुलिस कहा जाता है वैसी आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था का भी वर्णन किया है उस से स्पष्ट है कि वे राजनैतिक शास्त्र के कितने बड़े और अनुभवी विद्वान थे।

महत्त्व की बात है कि चाणक्य का अर्थशास्त्र उस युग की आर्थिक व्यवस्था का एक विश्व कोश है। ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में भारत कौन सा व्यापारिक माल बनाता था, इस की जानकारी तो हमें चाणक्य के इसी ग्रंथ से मिलती है। हमें जानकारी मिलती है कि तब भी भारत रेशम का सब से बड़ा अंतर्राष्ट्रीय व्यापारी देश था। उन्होंने छह प्रकार के रेशम की जानकारी दी है जिन में एक चीनी था। बाहर से आए व्यापारियों के रहने की व्यवस्था से लेकर आज के युग की चुंगी कर व्यवस्था का भी उल्लेख है। चाणक्य ने केवल एक भ्रष्ट शासन को समाप्त करके नया राज्य ही नहीं बनाया अपितु उसे चलाने की हर आवश्यकता का भी निर्देश किया। चाणक्य ने जिस चंद्रगुप्त को राजा बनाया उस के समय में भारत में, विशेषकर पूर्वी भारत में बौद्ध धर्म का बोलबाला था। गौतम बुद्ध का प्रभाव पाटलीपुत्र और आसपास के पूरे क्षेत्र में फैल चुका था। उसी युग में महावीर का भी उदय हुआ। जैन संदेश भी इसी क्षेत्र में व्याप्त था। चंद्रगुप्त न बौद्ध थे और न जैन। उन के गुरु चाणक्य तो वैदिक ब्राह्मण थे। फिर भी राजा के लिए यह कोई चुनौती नहीं थी क्यों कि वे सर्वधर्म के प्रति आदर की भावना पर चलते थे। राज्य चलाने के लिए किसी धर्म या दार्शनिक विचार का दमन करना आवश्यक नहीं था। यह शिक्षा भी चाणक्य ने ही दी थी। जैन सूत्रों के अनुसार चन्द्रगुप्त जीवन के अंतिम दिनों में जैन हो गए थे, लेकिन उन का पौत्र अशोक बौद्ध हो गया। लेकिन धर्म की भिन्नता या विचारों की विविधता शासन के लिए कोई बाधा नहीं थी तो इस लिए विचारों पर बंधन की धारणा कभी भारतीय संस्कृति में मान्य नहीं रही है। जिसे मौर्य शासन व्यवस्था कहते हैं वे दरअसल चाणक्य की बताई व्यवस्था ही थी जिसे कालांतर में मौर्य शासकों ने देश के अन्य भागों में भी लागू किया। चंद्रगुप्त के दो पीढ़ी पश्चात अशोक ने यही व्यवस्था पहली बार कश्मीर में लागू की जो उन के साम्राज्य का अंग बन गया था।

(लेखक : सेवा मिशन के संरक्षक एवं वरिष्ठ पत्रकार)

With Best Compliments from :-

ANKUR AGARWAL
+ 91 94120 22633

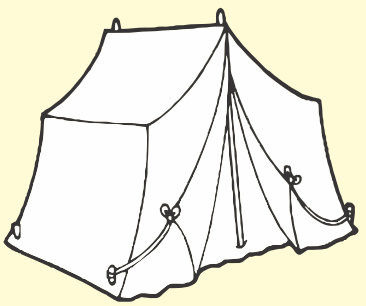

LALLOOJI SHIVGOVIND DAS TENT CO. *everything you need*

HARIDWAR • DEHRADUN • PATNA • ALLAHABAD

(A Class Contractor)
Government & Corporate Event
Exhibition & Trade Fair
VIP Visits & Rally
Congregation & Fair
Warehousings & Camping
Indoor & Outdoor Design

Head Office :
Devpura, Haridwar - 249401
Uttarakhand
+91 9719203783, +91 9412022633
Email : lallojitents@gmail.com
www.facebook.com/lsdtc

चाणक्य नीति अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के संदर्भ में

चंद्रगुप्त मौर्य का शासन काल भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग था इसके संस्थापक और निर्माता आचार्य चाणक्य थे जो अपनी कूटनीति के लिए विश्वविख्यात हैं। सिकन्दर के विश्वविजय का स्वप्न उन्होंने भंग कर दिया, भारत में उसके पांव नहीं जमने दिये सेल्यूकस को संधि करनी पड़ी, सम्राट चन्द्रगुप्त एक विशाल साम्राज्य के नायक बने जिसकी सीमाएं हजारों वर्ष बाद स्थापित मुगल और ब्रिटिश साम्राज्य से भी बड़ी थी, चन्द्रगुप्त मौर्य के पुत्र बिन्दुसार और उनके पुत्र अशोक भी लोकप्रिय सम्राट हुए। आचार्य चाणक्य की परिकल्पना में विजय की कामना लेकर आगे बढ़ते राजा को 'विजिगिषु' की संज्ञा दी गयी है, वह एक सशक्त शासक होता है जो अपनी सीमाओं की सुरक्षा में सक्षम तो होता ही है साथ ही साथ उनके विस्तार का प्रयास भी करता है। अपने दुश्मनों को पराजित करने के लिए साम, दाम, दण्ड और भेद का प्रयोग समय और परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए करता है देश और प्रजा का हित उसके लिए सर्वोच्च होता है, उसका सुख प्रजा के सुख में न कि अपने व्यक्तिगत स्वार्थ में-**प्रजा सुखे च सुखम राज्ञः, प्रजा हिते च हितम्।।**

आचार्य चाणक्य के मत में विजिगीषु दुश्मनों और दोस्तों से घिरा होता है जिसे उन्होंने मण्डल की संज्ञा दी सीमा से लगे हुए राज्य का शासक दुश्मन होता है, उसके दुश्मन दोस्त बनाये जा सकते हैं।

मण्डल व्यवस्था इस बात को इंगित करती है कि दूसरे देश के शासकों को केवल दुश्मन या मित्र समझना भूल है, मध्यम और उदासीन राजाओं की भूमिका भी महत्वपूर्ण हो सकती है यह विजिगीषु की क्षमता पर निर्भर है कि उनको कैसे अपने साथ मिला पाता है, अन्य राजाओं की तरह ये भी महत्वाकांक्षी हो सकते हैं उनसे दुश्मनी महंगी पड़ सकती है उनका साथ रहना देश के हित में हो सकता है, दुश्मन राजा चाहे सामने का हो या पीछे का उसके दुश्मनों से दोस्ती का हर सम्भव प्रयास करना चाहिए, उसके दोस्तों से सावधान रहना चाहिए और कोशिश करनी चाहिए कि उनके बीच दरार पैदा हो, उनकी मित्रता टूटे और उसका लाभ उठाया जा सके, जो आज दुश्मन हैं, कल मित्र हो सकते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में कोई हमेशा के लिए मित्र या दुश्मन नहीं होता।

विजिगीषु जब दुश्मन पर हमला करना चाहता है तो उसे इस बात से आश्वस्त होना होगा कि दुश्मन को उसके मित्रों से मदद नहीं मिल पायेगी इसके लिए युद्ध के पहले उसे दुश्मन और उसके मित्र के बीच में तनाव की स्थिति पैदा करनी होगी। इसके लिये गुप्तचरों का जाल बिछाकर, उनकी प्रजा में और अधिकारियों में गलतफहमी पैदा करके विद्वेष पैदा करना, उपद्रव कराना, उनकी सेना में फूट डालना जैसे तरीकों का इस्तेमाल किया जा सकता है। विजय की आकांक्षा से छेड़े हुए युद्ध में लक्ष्य का महत्व है न कि साधनों का। यह समय साधनों के औचित्य पर विचार करने का नहीं होता, विजिगीषु पर जब दुश्मन के हमले की आशंका होती है तो वह अपने मित्र राजाओं को दुश्मन पर हमला करने के लिये तैयार रहने को प्रेरित कर सकता है।

बारह प्रकार के राजाओं के घेरे को राजप्रति का नाम दिया गया है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक राजा के अपने घेरे होते हैं। हर घेरे में पांच तत्व की मान्यता है-अमात्य (मंत्री), जनपद(देश), दुर्ग (किला) और कोश (खजाना) प्रत्येक राजा के पांच तत्वों को मिलाकर कुल 60 तत्व होते हैं जिसे द्रव्य प्रति का नाम दिया गया है। बारह राजा और साठ तत्वों को मिलाकर कुल 62 तत्व बनते हैं जो मण्डल (राजाओं के घेरे) को पूरा करते हैं। विजिगीषु को युद्ध या शान्ति का निर्णय अपनी और दुश्मनों की ताकत का सही अंदाज लेकर करना चाहिए। शान्ति लाभदायक है यदि युद्ध से लाभ नजर नहीं आता। अपने दुश्मन से अधिक ताकतवर राजा के साथ संधि लाभप्रद होती है। इसके लिए ताकतवर राजा से अच्छे सम्बन्ध रखने के लिए हर सम्भव प्रयत्न करने चाहिए।

जब दो बड़े दुश्मन हों तो उनमें से जो अधिक ताकतवर हो उससे संधि कर लेना हितकर है। आवश्यक हो तो दोनों से संधि की जा सकती है। यह व्यवस्था स्थायी नहीं समझनी चाहिए। अवसर आने पर दोहरी नीति अपनायी जा सकती है जैसे दोनों दुश्मनों में फूट डालना, और उनमें तनाव पैदा करना, किसी तीसरे राजा से दोस्ती करना जो उन दोनों के विरुद्ध हो, मध्यम और उदासीन राजाओं का सहयोग लेना आदि हर स्थिति में निर्णय देश के हित में होना चाहिए व्यक्तिगत लाभ और सम्बन्धों को देखकर नहीं।

विजिगीषु के दुश्मन दो प्रकार के होते हैं। एक तो स्वाभाविक दुश्मन होता है जो बराबर का ताकतवर है और जिसकी सीमाएं देश से लगी हुई हैं। दूसरा काल्पनिक दुश्मन है जो इतना ताकतवर नहीं है कि युद्ध करके जीत जाये किन्तु दुश्मनी का भाव रखता है। दुश्मनों से मित्रता की कोशिश करता है। कुछ राजाओं से मित्रता विशेष कारणों से की जा सकती है जिससे अपने देश का लाभ हो या व्यापार में, सैन्य शक्ति बढ़ाने में, कुछ पड़ोसी राज्य ऐसे भी हो सकते हैं जिनके सर पर दुश्मनों की तलवार लटकती रहती है, जो कमजोर हैं उन्हें वसल की संज्ञा दी गयी है।

राजा शक्तिशाली होना चाहिए, तभी राष्ट्र उन्नति करता है। राजा की शक्ति के तीन प्रमुख स्रोत हैं मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक। मानसिक शक्ति उसे सही निर्णय के लिए प्रेरित करती है, शारीरिक शक्ति युद्ध में वीरता प्रदान करती है और आध्यात्मिक शक्ति उसे ऊर्जा देती है, प्रजा हित में काम करने की प्रेरणा देती है। कमजोर और विलासी प्रवृति के राजा शक्तिशाली राजा से डरते हैं। शक्तिशाली दुश्मन राजा को कमजोर करने के लिए विषकन्याओं का उपयोग भी किया जा सकता है जो उन्हें विलासिता में डुबाकर कमजोर कर दें।

मित्रता उन राज्यों से बढ़ाई जानी चाहिये जो विश्वास योग्य हों। दुहरी नीति उन परिस्थितियों में अपनायी जानी चाहिए जब एक दुश्मन से युद्ध का मन हो और दूसरे को न छोड़ने या दोस्त बनाने की सोच हो। मित्र राष्ट्र ऐसी स्थिति में सहयोगी हो सकते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में निरपेक्षता का भी महत्त्व है। जब शान्ति के लिये संधि या युद्ध

करने का अवसर न हो तो निरपेक्ष रहना ही श्रेयस्कर होता है। मंडल में मध्यम और उदासीन राजा निरपेक्ष रहने में ही अपनी भलाई समझते हैं।

युद्ध करने की स्थिति पैदा होने पर समय, स्थान और सैन्य शक्ति, आन्तरिक सुरक्षा आदि पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। युद्ध की तैयारी में मित्र देशों को साथ लेना, दुश्मन पर पीछे से हमला करवाना, सामने से स्वयं अपनी सेना के बल पर लोहा लेना, अभेद्य चक्रव्यूह की रचना, बहाने से हमला करने की योजना की आवश्यकता पड़ सकती है जिसके लिये पूरी तैयारी होनी चाहिए।

कूटनीति के चार प्रमुख अस्त्र हैं जिनका प्रयोग राजा को समय और परिस्थितियों को ध्यान में रखकर करना चाहिए- साम, दाम, दण्ड और भेद। जब मित्रता दिखाने (साम) की आवश्यकता हो तो आकर्षक उपहार आतिथ्य, समरसता और सम्बन्ध बढ़ाने के प्रयास करने चाहिए जिससे दूसरे पक्ष में विश्वास पैदा हो। ताकत का इस्तेमाल, दुश्मन के घर में आग लगाने की योजना, उसकी सेना और अधिकारियों में फूट डालना, उसके करीबी रिश्तेदारों और उच्च पदों पर स्थित कुछ लोगों को प्रलोभन देकर अपनी ओर खींचना कूटनीति के अंग हैं।

विजिगीषु एकक्षत्र राज कर सके, इसके लिये विदेश नीति ऐसी होनी चाहिए जिससे राष्ट्र का हित सबसे ऊपर हो देश शक्तिशाली हो, उसकी सीमाएं और साधन बढ़ें, दुश्मन कमजोर हों और प्रजा की भलाई (योगक्षेम) हो। ऐसी नीति के 6 प्रमुख अंग हैं-संधि, समन्वय (मित्रता) द्वैदीभाव (दुहरी नीति) आसन (ठहराव), यान (युद्ध की तैयारी) एवं विग्रह (कूटनीतिक युद्ध)। युद्ध भूमि में लड़ाई अन्तिम स्थिति है जिसका निर्णय अपनी और दुश्मन की शक्ति को तौलकर ही करनी चाहिए।

जब दुश्मन की और अपनी स्थिति एक जैसी हो, तो शान्ति बनाये रखने में ही भलाई है। सन्धि अनेक प्रकार की हो सकती है जो शान्ति और समृद्धि में सहायक होती है जैसे हिरण्य संधि (देश को शान्ति मिले) कर्मसंधि (सेना और खजाना दोनों का लाभ) भूमि संधि (भूमि प्राप्ति)। हार की स्थिति में ऐसी संधियां भी हो सकती हैं जिनमें राज्य का कुछ हिस्सा देकर देश को बचाया जा सके। बड़ी धन राशि देकर देश को बचाया जाय (कपाल संधि) उद्देश्य है मजबूरी में संधि जिसे अवसर पाते ही तोड़ दिया जाय। संधि सीधे दो देशों के बीच हो सकती है या आवश्यकता पड़ने पर किसी तीसरे देश को बिचौलिया बनाया जा सकता है। सन्धि में शपथ की व्यवस्था भी हो सकती है कौटिल्य के मत में इस व्यवस्था का सम्मान तभी तक करना चाहिए जब तक अपनी स्थिति दूसरे पक्ष की अपेक्षा कमजोर हो। गुप्त संधि भी की जा सकती है जिससे दोनों पक्षों में आपसी विश्वास हो और मिलकर महत्त्वपूर्ण कदम उठाने हों। सन्धि को एक तात्कालिक व्यवस्था के रूप में देखा जाना चाहिए न कि स्थायी व्यवस्था के रूप में। देश हित में संधि तोड़ देना भी विदेश नीति का हिस्सा होता है।

बांटो और राज करो, कूटनीति का एक महत्त्वपूर्ण अस्त्र है। दुश्मन को बगैर युद्ध के जीतने का एक अच्छा साधन है। युगों से शासक इसका इस्तेमाल अपनी शक्ति बढ़ाने और दुश्मन को कमजोर करने के लिए करते आये हैं। कूटनीति युद्ध में जायज क्या है और नाजायज क्या, शासक इस पर ध्यान नहीं देते, जोर इस बात पर होता है कि अपने राष्ट्र की शक्ति कैसे बढ़े, दुश्मन कैसे टूटे। इसके लिये षड्यन्त्र करना, दुश्मन को हर तरह से नुकसान पहुंचाना सब कुछ जायज है।

दुश्मन पर हमला करने का अच्छा अवसर तब होता है जब उससे भी अधिक शक्तिशाली राष्ट्र सामने से उसे ललकारता है ऐसी परिस्थिति में दुश्मन जिस चक्रव्यूह में फंस जाता है उससे निकलना उसके लिए कठिन होता है। जब हमला अन्य राष्ट्रों को साथ लेकर करते हैं तो जीतने पर जो लाभ होता है उसके बंटवारे के बारे में समझौता पहले से करना चाहिए ताकि युद्ध के बाद आपस में झगड़े की स्थिति न बने।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के संदर्भ में अर्थशास्त्र में जो विशद व्याख्या की गई है, उसका लोहा राजनीति के पंडित, नेता, शासक सभी मानते हैं। चाणक्य नीति को अनीति कहने वालों की भी कमी नहीं है क्योंकि उनका सिद्धान्त व्यवहारिक है मूल्य परक नहीं। क्या जायज है क्या नाजायज इसका फैसला राजा (आधुनिक संदर्भ में राष्ट्राध्यक्ष या प्रधानमंत्री जो सत्ता का कर्णधार होता है) को करना होता है, जिसके लिए राष्ट्र हित सर्वोपरि है। जो राजा राष्ट्रहित की जगह अपना और अपने सम्बन्धियों, सहयोगियों और सलाहकारों के हित को राष्ट्रहित के आगे कर देते हैं, वे स्वयं भी नष्ट होते हैं और राष्ट्र के पतन का भी कारण बनते हैं। चाणक्य ने राजा को अपनी इंद्रियों पर नियन्त्रण की सलाह दी और इसी में राष्ट्रहित का बीज मंत्र दिया-'राज्यस्य मूलम् इन्द्रिय जयः।

साभार : राष्ट्रीय धरोहर

अंक-विशेष

राजसी ठाट-बाट से दूर थे चाणक्य

-डॉ. कृष्णा झरे

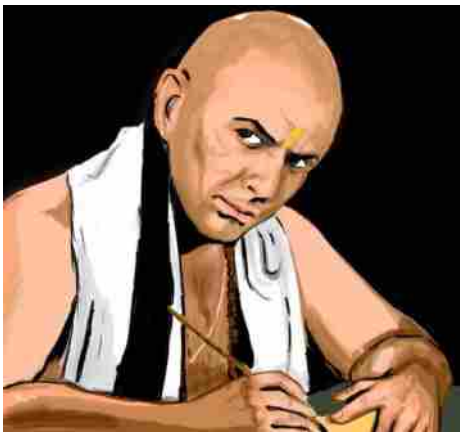

मुद्राराक्षस के अनुसार चाणक्य का असली नाम विष्णु गुप्त था। विष्णुपुराण, भागवत आदि पुराणों और कथासरित्सागर आदि ग्रन्थों में तो चाणक्य का नाम आया ही है, बौद्ध ग्रन्थों में भी इनकी कथा मिलती है। चाणक्य तक्ष शिला (एक नगर जो रावलपिंडी के पास था) के निवासी थे। **अस्तु कौटिल्य इति वा कौटिल्य इति या चाणक्यस्य गोत्रनामधेयम्।।** कौटिल्य को चाणक्य नाम से पुकारने वाले कई विद्वानों का मत है कि चाणक का पुत्र होने के कारण यह चाणक्य कहलाये। इन नामों के अलावा और भी कई नामों का उल्लेख मिलता है। कहा जाता है कि उनका मूल नाम विष्णुगुप्त ही था। कौटिल्य, चाणक्य और विष्णुगुप्त तीनों नामों से संबन्धित कई सन्दर्भ मिलते हैं, किंतु इन तीनों नामों के अलावा उनके और भी कई नामों का उल्लेख किया गया है, जैसे वात्स्यायन, मलंग, अंगुल, वारानक्, कात्यान इत्यादि भिन्न-भिन्न नामों में से कौन सा सही नाम है और कौन सा गलत है नाम, यह विवाद का विषय हो सकता है। परन्तु अधिकांश पाश्चात्य और भारतीय विद्वानों ने अर्थशास्त्र के लेखक के रूप में कौटिल्य नाम का ही प्रयोग किया है। कुछ पाश्चात्य विद्वानों ने कौटिल्य के अस्तित्व पर ही प्रश्नवाचक चिन्ह लगा दिया है। जॉली ने तो यहाँ तक कह डाला है कि 'अर्थशास्त्र' किसी कौटिल्य नामक व्यक्ति की कृति नहीं है। यह किसी अन्य पंडित या आचार्य का रचित ग्रन्थ है। लेकिन श्यामा शास्त्री और गणपति शास्त्री ने पाश्चात्य विचारकों के मत का खण्डन किया है। दोनों का यह निश्चय मत है कि कौटिल्य का पूर्ण अस्तित्व था, भले ही उनके नामों में मतांतर पाया जाता हो। इनके जीवन की घटनाओं का विशेष सम्बन्ध चन्द्रगुप्त मौर्य की राज्यप्राप्ति से है। ये उस समय के एक प्रसिद्ध विद्वान थे, इसमें कोई सन्देह नहीं। चाणक्य राजसी ठाट-बाट से दूर एक छोटी सी कुटिया में रहते थे।

एक बार पाटलिपुत्र के राजा नंद के यहाँ यज्ञ था। उसमें यह भी गये और भोजन के समय एक प्रधान आसन पर जा बैठे, महाराज नंद ने इनका काला रंग देख इन्हें उस आसन से उठवा दिया। इस पर क्रुद्ध होकर इन्होंने प्रतिज्ञा की कि जब तक मैं नंदों का नाश नहीं कर लूंगा तब तक अपनी शिखा नहीं बांधूँगा। उन्हीं दिनों राजकुमार चन्द्रगुप्त राज्य से निकाले गये थे। चन्द्रगुप्त ने चाणक्य से मेल किया और दोनों ने मिलकर म्लेच्छ राजा पर्वतक की सेना लेकर पाटलिपुत्र पर चढ़ाई की तथा नंदों को युद्ध में परास्त कर मार डाला। नन्दों के नाश के सम्बन्ध में कई कथाएं हैं। एक बार चाणक्य ने शकटार के यहाँ निर्माल्य भेजा जिसे छूते ही महानन्द और उसके पुत्र मर गये। कहीं विषकन्या भेजने की भी कथा है।

कुछ विद्वानों के अनुसार कौटिल्य का जन्म पंजाब के चणक क्षेत्र में हुआ था, जबकि कुछ विद्वान मानते हैं कि इनका जन्म दक्षिण भारत में हुआ था। कई विद्वानों का मत है कि वह कांचीपुरम के द्रविण ब्राम्हण थे। जीविकोपार्जन की खोज में उत्तर भारत आये थे। कुछ विद्वान केरल भी उनका जन्म स्थान बताते हैं। कई विद्वानों ने उन्हें मगध का ही मूल निवासी माना है। कुछ बौद्ध साहित्यों में उन्हें तक्षशिला का निवासी बताया है। परन्तु कई सन्दर्भो के आधार पर तक्षशिला को उनका जन्म स्थान मानना ठीक होगा। क्योंकि अलेक्जेण्डर का आक्रमण अधिकतर तक्षशिला के क्षेत्र में हुआ था। कौटिल्य का बचपन गरीबी और दिक्कतों में गुजरा होगा क्योंकि इनकी शिक्षा-दीक्षा के सम्बन्ध में कहीं कुछ विशेष जिक्र नहीं मिलता है, परन्तु उनकी बुद्धि की प्रखरता और विद्वता उनके विचारों से परिलक्षित होती है। वह कुरूप होते हुए भी शारीरिक रूप से बलिष्ठ थे। उनकी पुस्तक अर्थशास्त्र के अवलोकन से उनकी प्रतिभा, बहुआयामी व्यक्तित्व और दूरदर्शिता का पूर्ण आभास होता है। कौटिल्य के बारे में कहा जाता है कि वह बड़े ही स्वाभिमानी एवं क्रोधी स्वभाव के थे।

भारत पर सिकन्दर के आक्रमण के कारण छोटे-छोटे राज्यों की पराजय से अभिभूत होकर कौटिल्य ने राजनीति में प्रवेश करने का संकल्प लिया। उनकी सर्वोपरि इच्छा थी भारत को एक गौरवशाली और विशाल राज्य के रूप में देखना। कौटिल्य की विद्वता, निपुणता और दूरदर्शिता का बखान भारत के शास्त्रों, काव्यों तथा अन्य ग्रन्थों में परिव्याप्त है।

उनकी मान्यता थी कि राजा या मंत्री अपने चरित्र और ऊँचे आदर्शों के द्वारा लोगों के सामने एक प्रतिमान दे सकता है। चाणक्य ने सदैव मर्यादाओं का पालन किया और कर्मठता की जिन्दगी बितायी। कहा जाता है कि बाद में मंत्री पद त्याग कर वानप्रस्थ जीवन व्यतीत किया था। चाणक्य एक प्रकाण्ड विद्वान तथा एक गंभीर चिंतक के रूप में तो विख्यात हैं ही, एक व्यवहारिक एवं चतुर राजनीतिज्ञ के रूप में भी चाणक्य को ख्याति मिली है। नंदवंश के विनाश, मगध राज्य की स्थापना एवं विस्तार में ऐतिहासिक योगदान है।

(लेखक देवसंस्कृति विश्वविद्यालय में परीक्षा नियंत्रक)

'सेवाज्योति' के चाणक्य विशेषांक के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

मा. जयभान सिंह पवैया
शिक्षा मंत्री
म.प्र. सरकार

दिलीप सिंह कुशवाह
वरिष्ठ भाजपा नेता
ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

चाणक्य

-सृष्टि चतुर्वेदी

विष्णुगुप्त चाणक्य एक ऐसा नाम है जिनके कारण हमें महान् सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य और चक्रवर्ती सम्राट अशोक जैसे महान शासक मिले। इससे यह पता चलता है कि जीवन में सही मार्गदर्शन मिलना कितना जरुरी है, ऐसा नहीं है कि चाणक्य ने सिर्फ राजनीति से संबधित विषयों पर ही अपने विचार प्रकट किये हैं। कुछ सामान्य जीवन से जुड़े विषय भी हैं जिस पर चाणक्य ने अपनी दृष्टि डाली है।

अभ्यास - अभ्यास की आजकल सबको जरुरत है। बूँद-बूँद से घड़ा भर जाता है, बूँद-बूँद से मिलकर नदी बन जाती है, पाई-पाई जोड़ने से व्यक्ति धनवान बन जाता है। उसी प्रकार यदि निरन्तर अभ्यास किया जाये तो मनुष्य के लिए कोई भी विद्या अप्राप्त नहीं है।

अहंकार - जो मनुष्य अहंकार में डूब जाता है वह अति शीघ्र पापों में लिप्त होकर नष्ट हो जाता है।

क्रोध - क्रोध भंयकरअग्नि के समान है जो अपनी लपटों से मनुष्य को बार-बार प्रताड़ित करता है।

आचरण - मनुष्य का आचरण ही लोगों को अपने समक्ष नत्मस्तक करने के लिए पर्याप्त है। इससे शत्रुओं पर भी विजय पायी जा सकती है।

यहाँ कुछ ऐसे विषय हैं जिनके बारे में लोग जानते तो हैं पर अध्ययन नहीं करते जबकि सिर्फ छोटी-छोटी बातों को ध्यान में रखने से हम बहुत सी परेशानियों से बच सकते हैं। लेकिन मेरी बात मत सुनिये, खुद अध्ययन करिये क्योंकि आजकल के इस सोशल मीडिया वर्ल्ड में लोग किसी भी बात के नीचे 'Acc. to chananky' लगाकर पोस्ट कर रहे हैं और बाकी लोग उसे सही मान लेते हैं। स्वयं कुछ अध्ययन नहीं करते, कोई किताब नहीं पढ़ी। बस वॉट्शप पर लम्बा सा मैसेज पढ़ा और फिर 10 लोगों को वो लम्बा सा मैसेज फारवर्ड़ कर के पुण्य कमा लिया ऐसा सोचकर खुश हो जाते हैं। जब तक जीवन में 'क्यों' न हो तब तक जीवन अधूरा है। ऐसा नहीं है कि हम सब में चाणक्य हैं क्योंकि चाणक्य सौ में से एक होता है जिसे सवाल करना आता है, जो अध्ययन करता है और फिर किसी चीज को सही या गलत करता है, जो समाज की भेड़-चाल में नहीं चलता, अपना रास्ता खुद बनाता है और यह क्षमता सभी में नहीं होती है।

With Best Compliments from :-

GANGOTRI TRAVELS™

Arjun Saini - 9837183468
Raj K. Saini - 9837011317
Gulshan Saini - 9837776695
Sonu - 9412919814

• PACKAGE TOUR • CAR RENTAL • RAFTING • TREAKING • HOTEL BOOKING • RAILWAY TICKET • FLIGHT TICKET

Kali Kamli Dharamshala, Railway Road, Haridwar : 01334-225061, 220011, 9837773677, 9411171699, 8430104545
Web. : www.gangotritravels.com, www.travelmyindia.in, www.gttaxi.com | **E-mail :** info@gangotritravels.com, arjungango@rediffmail.com

GT ROOMS
A Unit of Gangotri Travels

Our Hotels...

EKANT RESORT (Mob. No. - 8191001941)
Gangotri Road, Netala, Uttarkashi (U.K.)

HOTEL KEDAR PALACE (Mob. No. - 8191001942)
Kedar Nath Road, Rampur, Distt. Rudraprayag (U.K.)

HOTEL ASHISH (Mob. No. : 8191001943)
Badrinath Road, Near Badri Kedar Samiti, Pipalkoti, Distt. Chamoli (U.K.)

KRISHNA PALACE (Mob. No. : 9411148755)
Near Kashi Math Badrinath Ji

Corporate Office :
Manohar Dham, Jassaram Road, Haridwar : 01334-220011, 225061
Reservation Office : Gangotri Travels, Kali Kamli Dharamshala, Railway Road, Haridwar : 01334-220011, 9837773677
Web. : www.gtrooms.com,
E-mail : info@gtrooms.com

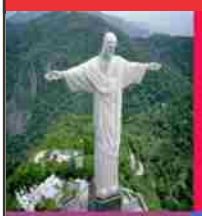

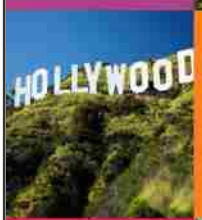

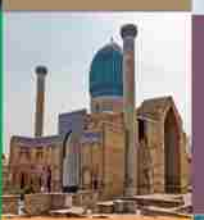

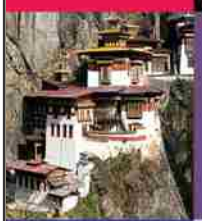

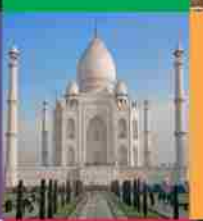

Holiday Merchants
अब की बार ट्रेवल हमारे साथ...
Latin America
Africa
Europe
U.A.E Dubai
Greece Turkey
HOLLYWOOD
USA
Canada
China
Asia Central Asia
Egypt Jordan
Nepal
India
Russia
New Zealand
Australasia
DIVYA PREM SEWA MISSION
दिव्य प्रेम ग्रुप Bhutan में
दिव्य प्रेम ग्रुप Singapore में
दिव्य प्रेम ग्रुप HongKong में
दिव्य प्रेम ग्रुप Mauritius में
TAAI
nima
OTOAI
Worldwide Packages & Online Hotel Bookings
Holiday Merchants
making business a pleasure...
8/3-3rd Floor, Abdul Aziz Road,
Karol Bagh (WEA) New Delhi-110005
sales@holidaymerchants.com | +911-400 50000
www.holidaymerchants.com

साक्षात्कार

न तो नाटक कभी मरा और न ही रंगमंच : मनोज जोशी

दिव्य प्रेम सेवा मिशन का उद्देश्य पवित्र

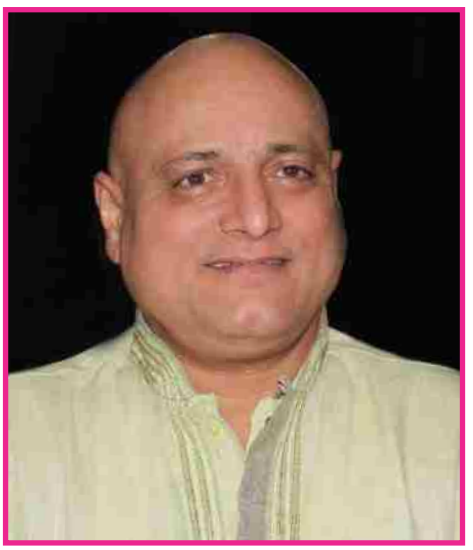

नाम	–	**मनोज नवनीत जोशी**
जन्म स्थान	–	रायगढ़, महाराष्ट्र
पिता का नाम	–	नवनीत शास्त्री जोशी
माता का नाम	–	कपिला बहन जोशी
शिक्षा	–	पब्लिकेशन डिजाइनिंग (कामर्शियल आर्ट)
कार्य	–	गुजराती, मराठी, हिन्दी के चार हजार एपीसोड व 107 फिल्मों में कार्य

मनोज जोशी 27 सालों से मिहिर भूता द्वारा लिखित 'चाणक्य' का मंचन कर रहे हैं। इस नाटक के जरिए वे छोटे शहरों में जनचेतना जगाने का काम कर रहे हैं। 1990 में पहली बार गुजराती में 'चाणक्य' का मंचन मुंबई में किया। सीएम रहते हुए मा. नरेन्द्र मोदी ने हिंदी में इसके मंचन की प्रेरणा दी और 1000वें मंचन को देखने का वादा किया। मा. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दिसम्बर-2016 में बनारस हिन्दु विश्व विद्यालय में आयोजित 1000वें चाणक्य मंचन को देखकर अपना वादा पूरा किया।

कुष्ठरोगियों के बच्चों के कल्याण के लिए काम कर रहे दिव्य प्रेम सेवा मिशन के उद्देश्य को पवित्र बताते हुए मनोज खुद को इसका हिस्सा बताते हैं। वह कहते हैं कि 21 हजार परिवारों को अपने साथ जोड़ने के सेवा मिशन के लक्ष्य को पूरा करना है। चक्रवर्ती सम्राट अशोक सीरियल में चाणक्य की भूमिका निभाने वाले मनोज नवनीत जोशी स्वयं द्वारा निर्मित नाटक चाणक्य का मंचन करते हैं। उनके साथ 22 कलाकारों की टीम है। जोशी जी कहते हैं कि विश्व रंगमंच पर चाहे शेक्सपीयर हों, जर्मनी के ब्रेटोल ब्रेक्थ हों या कोई और जो भी आया रंगमंच को समृद्ध कर गया। यह समृद्धि सदैव अक्षुण्ण बनी रही और बढ़ती गई। इनके नाटकों के मंचन आज भी हो रहे हैं। कालिदास के समय से ही नाटक का मंचन चल रहा है। मुद्राराक्षस चाणक्य के कालखंड के पंद्रह सौ साल बाद लिखा हुआ है, कई अद्भुत नाटक उसी काल से चले आ रहे हैं। न तो नाटक कभी मरा और न ही रंगमंच। रंगमंच आज भी अपनी जगह खड़ा है। दर्शक को अच्छा चाहिए, चाहे वह फिल्म हो या नाटक।

ऐतिहासिक नाटक 'चाणक्य' का मंचन करने वाले सुप्रसिद्ध बॉलीवुड अभिनेता मनोज जोशी ने अपने फिल्मी कैरियर की शुरूआत फिल्म 'सरफरोश' से की। इसके बाद देवदास, विवाह, हंगामा, हलचल, चुप चुप के, भूल भूलैया, हंसी तो फंसी, जैसी कई हिट फिल्मों में उन्हें किरदार निभाते हुए देखा व पसन्द किया गया। कुछ दिन पहले एक मराठी फिल्म में अभिनय के लिए सहायक अभिनेता का राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला है। मनोज न सिर्फ एक अच्छे अभिनेता हैं, बल्कि संवेदनशील इंसान भी हैं। अप्रैल माह में दिव्य प्रेम सेवा मिशन के तत्वावधान में दिल्ली, फर्रूखाबाद, फैजाबाद, गोरखपुर एवं वाराणसी में चाणक्य का मंचन किया गया। इसी मध्य मिशन द्वारा प्रकाशित **सेवा ज्योति** पत्रिका के प्रबन्ध सम्पादक **बालकृष्ण शास्त्री** की उनकी जिन्दगी व अभिनय से जुड़े कई पहलुओं पर बात हुई।

प्रस्तुत हैं बातचीत के प्रमुख अंश:-

उत्तर प्रदेश में चाणक्य नाटक मंचन की शुरूआत कब से हुई?

मैं नाटक मंचन के लिए कई जगह गया हूँ उत्तर प्रदेश में झांसी से शुरूआत हुई थी जो दिव्य प्रेम सेवा मिशन हरिद्वार द्वारा आयोजित किया गया था। चाणक्य का मंचन सेवा मिशन के माध्यम से अब तक उत्तर प्रदेश के कई नगरों में हो चुका है।

थीम के रूप में आपने चाणक्य को ही क्यों चुना?

देखिये चाणक्य एक व्यक्तित्व नहीं, एक नाटक नहीं बल्कि एक आन्दोलन है। समाज में चाणक्य की नीतियों व व्यक्तित्व को लेकर कई नकारात्मक भ्रांतियां फैली हुई हैं, जिन्हें दूर करना जरूरी है। वह सर्वश्रेष्ठ राजनीतिज्ञ व सच्चे देश प्रेमी थे। हमारे वर्तमान नीति निर्माताओं को जिन सिद्धांतों पर चलने की आवश्यकता है। उन्हें चाणक्य ने ढाई हजार वर्ष पूर्व ही लिख दिया था। मेरा मानना है कि अगर व्यक्ति पूर्ण सजग रहे, तो वह भी चाणक्य बन सकता है। हम चूंकि इण्टरटेनर हैं, इसलिए हमारा कर्तव्य बनता है कि बातों-बातों में लोगों को वह भी बता जायें, जो उन्हें जानने की वाकई जरूरत है।

टीवी सीरियल में काम करने का कैसा अनुभव रहा है?

टीवी सीरियल चाणक्य में काम किया पहले मुझे चाणक्य का किरदार निभाना था। फिर किसी वजह से मैंने 'श्रीयक' का रोल निभाया अच्छा अनुभव था। अभी भी टीवी सीरियल चक्रवर्ती सम्राट अशोक में चाणक्य का किरदार निभा रहा हूँ।

कामेडी फिल्मों में दर्शकों को हंसाना कितना मुश्किल है?

हास्य में ही जीवन की उसकी गम्भीरता छुपी है और यह बहुत जरूरी भी है। जब हास्य

किरदार दिल से निभाता हूँ तो दर्शक अपने आप हंस पड़ते हैं।

देश व समाज में क्या परिवर्तन देखना चाहते हैं?

परिवर्तन आ रहा है-एक बहुत बड़ा सकारात्मक परिवर्तन देश में हुआ है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की नीतियों से जिस तरह आम जनता जुड़ रही है और देश को बदलने का बीड़ा उठा रही है। उसे देखकर लगता है कि वाकई अच्छे दिन आ गये हैं।

थियेटर का अस्तित्व खत्म हो रहा है, क्यों?

फिल्मों की चकाचौंध में रंगमंच की आभा धूमिल पड़ गई है। इस बात से मैं इत्तफाक नहीं रखता। अगर फिल्में नाकाबिल हैं तो उन्हें भी दर्शक नकार देते हैं और थियेटर उम्दा है तो उसे हाथों-हाथ लेने में उन्हें देर नहीं लगती। नाटक अभी मरा नहीं है, सिर्फ उसके उत्थान की जरूरत है, देश के हर स्कूल में खेल की तरह अगर थियेटर को अनिवार्य विषय कर दिया जाए तो न केवल समाज में अच्छे कलाकार पैदा होंगे बल्कि थियेटर की प्रयोग धर्मिता से अच्छे इंसानों का भी निर्माण किया जा सकेगा। संगीत व नाटक तो हर भारतीय के डीएनए में है और इसे उसके खून से कभी अलग नहीं किया जा सकता, तो फिर थियेटर का अस्तित्व खत्म होने का तो सवाल ही नहीं उठता। महाकवि कालिदास के समय से हम नाटक व संगीत से जुड़े हैं और आगे भी जुड़े रहेंगे। सिर्फ मेरे लिए ही नहीं हर उस रंगकर्मी के लिए थियेटर योगा और प्राणायाम जो नाटक से प्यार करता है। जहाँ तक बात शोहरत और पैसे की है तो फिल्म के हीरो को भले ही थियेटर के कलाकार से ज्यादा पैसे मिलते हों पर शोहरत में वह कभी भी रंगकर्मी से आगे नहीं निकल सकता है। इसके एक नहीं कई उदाहरण हैं। नसीरूद्दीन शाह, इरफान खान, नाना पाटेकर, परेश रावल, जैसे कलाकारों ने अपने अभिनय से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जो ख्याति अर्जित की है, उसे फिल्म के हीरो कभी नहीं पा सकते हैं।

चाणक्य चरित्र के मुख्य सूत्र क्या हैं?

आज जो भी राजनेता या समाज सेवी जन कल्याण की भावना से जनता के हितों को संरक्षण देता है वही चाणक्य का सच्चा अनुयायी है। आक्रान्ताओं के खिलाफ संघर्ष व समाजवाद की स्थापना ही चाणक्य का सूत्र है। उन्होंने एक दासी पुत्र को मगध के सिंघासन पर बैठाकर सच्चे समाजवाद का संदेश दिया था। हमारे प्रधानमंत्री मोदी जी इसके काफी करीब हैं। आज की राजनीति में लोग चाणक्य और चंद्रगुप्त के रास्ते पर चल रहे हैं। आज कई देशों में चाणक्य को पढ़ाया जाता है लेकिन भारत में उसकी कोई कद्र नहीं है। यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ आज की राजनीति के चाणक्य हैं। वर्तमान राजनीति की बात करें तो मैं यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ से काफी प्रभावित हूँ, क्योंकि वो चाणक्य के पथ पर चल रहे हैं। जब से वो सीएम बने हैं तब से लेकर अभी तक प्रभावशाली निर्णय लिए हैं। इन दिनों जीएसटी की बात हो रही है जिसके बारे में चाणक्य ने अपने काल में ही कहा और लिखा था। चाणक्य ने टैक्स को लेकर भी सुझाव दिया था। कर के लिए सुझाया था कि मधुमक्खी फूल से शहद लेती है फिर भी पुष्प सूखता नहीं है, ऐसे ही सरकारों को जनता से टैक्स लेना चाहिए।

चाणक्य के अभिनय सफर में स्वयं को कितना बदला हुआ पाते हैं?

जो भी किया अपने दम पर किया है। विभिन्न किरदार निभाये हैं। 27 साल से चाणक्य नाटक कर रहा हूँ। एक कलाकार के तौर पर भी मैं इस नाटक से जुड़ा रहना चाहता हूँ क्योंकि इस किरदार में बहुत शेड्स हैं। मुझे नहीं लगता कि कोई भी एक्टर इस किरदार को करने से मना करेगा। मैं खुद चाणक्य नीति को पसन्द करता हूँ। उनकी नीतियां आज के दौर में भी प्रासंगिक हैं। मैं हर बार, हर मंच और हर शो में चाणक्य से कुछ न कुछ सीखता हूँ। इसके संवाद हर बार नये व ताजा लगते हैं।

चाणक्य नाटक बनाने की प्रेरणा कहां से मिली?

मेरे दादाजी वेद-शास्त्रों के ज्ञाता थे। पिताजी की भी यही स्थिति रही। बचपन में मैं जिस गुरुजी के पास संस्कृत पढ़ने जाता था, वह भी चाणक्य की कथाओं और उनके एक संघ भारत राष्ट्र के बारे में बताते थे। यह बात बीज रूप में मेरे भीतर प्रवेश कर गई थी। बड़ा हुआ तो अपने मित्र मिहिरभूता के साथ मिलकर चाणक्य पर नाटक बनाने के लिए बातचीत की तो उन्हें अच्छा लगा। अब सवाल पैदा हुआ कि उस समय की भाषा, संस्कृति, वेश-भूषा, रहन-सहन आदि क्या रहा होगा। इसके लिए हम लोगों ने अर्थशास्त्र, विष्णु पुराण, मुद्राराक्षस, चंद्रगुप्त आदि बहुत सारी पुस्तकें पढ़ीं। चार

साल लगे इस कार्य में। चूंकि इतिहास से बहुत छेड़छाड़ की गई है। मूल इतिहास तो हमारा नष्ट कर दिया गया और उसे भ्रष्ट कर परोसा गया है। हम लोगों ने उसे स्वीकार नहीं किया। पुस्तकों से सूत्र तलाश कर इतिहास को ठीक-ठीक समझने की कोशिश की। इसके बाद 1986 में नाटक लिखना शुरू किया जो 1990 में पूरा हुआ। इसके बाद मंचन शुरू किया गया। नाटक गुजराती व मराठी में था। 1996 में मिहिर भूता द्वारा इसका हिन्दी संस्करण तैयार किया गया। 2001 तक इसका अनवरत मंचन किया गया। इसके बाद मैं बीमार पड़ गया और मंचन तीन साल बंद रहा। पुन: 2004-05 में कुछ मंचन हुए। 2008 में मैं एक फिल्म की शूटिंग कर रहा था, उसी समय 26-11 को मुंबई में हमला हुआ। मेरे मन में एक सवाल पैदा हुआ कि इतनी सुरक्षा के बाद भी हमारे देश में आतंकवादी कैसे घुस जाते हैं। लोगों को राष्ट्रीयता के प्रति जागरूक करने के लिए नाटक चाणक्य एक बड़ी भूमिका निभा सकता है। फिर नये सिरे से इस नाटक का मंचन पूरे भारत में घूम-घूमकर करना शुरू किया गया।

इस नाटक से युवाओं को क्या संदेश देना चाहते हैं?

मैंने जो सीखा चाणक्य से सीखा। बुद्धिपूर्वक कड़ी मेहनत की। कोई शार्टकट नहीं अपनाया। यही मैं आने वाली पीढ़ी को बताना चाहता हूँ कि शार्टकट में सफलता के सूत्र निहित नहीं होते। बुद्धिपूर्वक कड़ी मेहनत व लगन ही सफलता के दरवाजे पर ले जाती है।

चाणक्य केवल एक नाटक नहीं है बल्कि देश की एकता और अखण्डता के लिए जागरूक करने का प्रयास है। मैं इस नाटक को महज एक मनोरंजन नहीं मानता हूँ। यह मेरे लिए सिर्फ एक किरदार नहीं है बल्कि एक मिशन है। मैं इस नाटक के जरिए देश के हर नागरिक को जागरूक करना चाहता हूँ। चाणक्य एक ऐसे विचारक थे जो देश को एकजुट करने में विश्वास करते थे और आज के युवाओं को यही समझने की जरूरत है। इससे उन्हें काफी सीखने को मिलेगा। भारतीय इतिहास में स्वर्णिम पृष्ठ पर अंकित चाणक्य नाटक कुशल राजनीति पर केन्द्रित है। इस नाट्य में दर्शाया गया है कि अपने राज्य में फैली क्रूरता और निरंकुशता के निवारण के लिए एक सक्षम, सदाचारी और प्रजा प्रेमी राजा का होना नितांत जरूरी है। अपनी इस महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए चाणक्य नाम का यह ब्राह्मण अपने दम्भी राजा से भी टकरा जाता है और समूचे राजवंश और राजसत्ता को सिंहासन से च्युत कर देता है। इस नाट्य प्रस्तुति का संदेश है कि अगर अपने राष्ट्र और राज्य के प्रति बुद्धिमता पूर्वक प्रयास और अडिग इरादे हों तो सत्ता के शीर्ष का मर्दन भी किया जा सकता है। चाणक्य ने आज से 2400 साल पहले ही कालाधन, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, नक्सलवाद पर प्रहार करते हुए इसके समाधान के रास्ते भी बता दिए थे।

'सेवाज्योति' के चाणक्य विशेषांक के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

एम. एल. मंगल

मैनेजिंग डायरेक्टर

MANGAL PROJECTS PVT. LTD.

मंगल प्रोजेक्ट्स प्रा. लि.
मंगल ट्रेडिंग कम्पनी

स्पेशलिस्ट इन ट्रेंचलेस टैक्नोलॉजी, ट्रेन्चिंग एण्ड ओएफसी स्पलाइसिंग वर्क

मुख्य कार्यालय :
शहर कोतवाली के सामने, एम.एस. रोड, मुरैना-476001 (म.प्र.)
फोन : 07532-222777, 227227 (कार्या.), 232599 (फैक्स)
मो. : +91-9425126066 ई-मेल : mangalprojects@yahoo.com

शाखा कार्यालय :
सी-260, श्यामनगर पुलिस स्टेशन के सामने,
निर्माण नगर, जयपुर-302019 (राजस्थान)
सी-51, सोनागिरी, रायसेन रोड, भोपाल-462021 (म.प्र.)

समाचार पत्रों से....

जनसत्ता Wed. 10 May 2017

सरोकार : कुष्ठ रोगियों के लिए आशीष की अथक साधना

सुनील दत्त पांडेय देहरादून 9 मई।

कुष्ठ रोगियों की सेवा ही उनके जीवन का हिस्सा बन गई है। उनकी अगली पीढ़ी की पढ़ाई, परवरिश तथा उनका उज्ज्वल भविष्य बनाना ही उनके जीवन का उद्देश्य है। उनका सारा संसार ही कुष्ठ रोगियों की सेवा करना है। समाज से उपेक्षित कुष्ठ रोगियों को नया जीवन देना और उनके बच्चों के चेहरों पर मुस्कान लाना ही उनका असली धर्म है।

आप हरिद्वार के गंगा किनारे स्थित चंडीघाट के तट पर चले जाइए, वहां कुष्ठ रोगियों की बस्ती में आपको कुर्ता-पजामा पहने एक शख्सियत कुष्ठ रोगियों की मरहम पट्टी करते हुए और उनके बच्चों को दुलार करते हुए मिलेगी। यह शख्सियत कोई और नहीं बल्कि आशीष गौतम है। जिन्होंने अपनी दुनिया कुष्ठ रोगियों और उनके बाल-बच्चों के बीच ही रचा-बसा ली है।

20 साल की कड़ी साधना के बाद आशीष गौतम ने जहां कुष्ठ रोगियों में आत्मविश्वास जगाया है, वहीं उनके बच्चों में दुनिया में कुछ कर-गुजरने का जज्बा भी पैदा किया है। आज कुष्ठ रोगियों के बच्चे सामान्य बच्चों की तरह दिव्य प्रेम सेवा मिशन और पौड़ी गढ़वाल के गंगा भोगपुर गांव में वंदेमातरम कुंज में पढ़ाई, व्यायाम करते और खेलते हुए मिल जाएंगे।

मरहम-पट्टी, पढ़ाई और परवरिश का मिशन

उत्तराखंड

केंद्र के विश्व बैंक की मदद से कुष्ठ रोग उन्मूलन अभियान बड़े जोर-शोर से चलाने के बावजूद मुल्क में कुष्ठ रोगियों की तादाद बढ़ गई है।

2005 तक देश को कुष्ठ रोग मुक्त बनाने का भले ही केंद्र सरकार ने ऐलान किया था, परंतु एक सर्वे के मुताबिक 2015-16 में 1 लाख 27 हजार 326 कुष्ठ रोगी मौजूद हैं। 2005 में भारत में कुष्ठ रोगियों की तादाद 1,10,000 थी।

1.22 फीसद बढ़ी है 2015-16 में कुष्ठ रोगियों की संख्या भारत में 2014-15 के मुकाबले।

2015 में 60 फीसद कुष्ठ रोगी भारत में रहते है दुनिया के। 30 लाख लोगों में दुनिया में बीमारी को चिन्हित नहीं किया जा सका है।

दिव्य प्रेम सेवा मिशन में चेहरे पर मुस्कान लिए कुष्ठ रोगियों के बच्चे।

यही मेरे जीवन की सबसे अहम पूंजी है। -आशीष गौतम (कुष्ठ रोगियों के बच्चों के चेहरों पर मुस्कान पर कहा)

कुष्ठ रोगियों के बच्चों के लिए स्कूल

वंदेमातरम कुंज और दिव्य प्रेम सेवा मिशन में कुष्ठ रोगियों के बच्चों के लिए संचालित स्कूल में इन बच्चों को हाईस्कूल तक शिक्षा-दीक्षा दी जाती है। इनके रहने के लिए स्कूल में आवासीय परिसर भी है। इनके रहने, खाने, पीने और शिक्षा का खर्च दिव्य प्रेम सेवा मिशन ही वहन करता है। सरकार से मिशन कोई आर्थिक सहायता नही लेता है। हाईस्कूल पास करने के बाद इन बच्चों को मिशन हरिद्वार, ऋषिकेश और देहरादून के अन्य शिक्षण संस्थानों में उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिए अपने खर्चे पर भेजता है। रोगियों के कुछ बच्चे तो इंजीनियरिंग और चिकित्सा में नए आयाम स्थापित कर रहे है। वंदेमातरम कुंज और दिव्य प्रेम सेवा मिशन में कुष्ठ रोगियों के तीन सौ से ज्यादा बच्चे पढ़ रहे हैं।

साधना की बजाय सेवा

कुष्ठ रोगियों की सेवा-सुश्रुषा का बीड़ा उठाने वाले आशीष गौतम की कहानी भी चौंकाने वाली है। उत्तरप्रदेश के हमीरपुर जिले के निवादा गांव के आशीष इलाहाबाद विश्वविद्यालय में कानून की पढ़ाई करने के बाद 1994 में साधना के लिए उत्तराखंड के गंगोत्री के तपोवन में एक साधक के रूप में पहुंचे थे। कुछ साल वहां साधना करने के बाद 1997 में आशीष हरिद्वार पहुंचे। जहां गंगा के तट चंडीघाट में उन्हें कुष्ठ रोगियों की बस्ती की जानकारी मिली। वे वहां गए। उनकी दयनीय हालत देखकर हिमालय में तपस्या कर उच्च कोटि का साधक बनने का आशीष गौतम का विचार बदल गया। उन्होंने इनकी सेवा करने की ठान ली। 1998 में हरिद्वार में लगे कुंभ मेला के दौरान स्वामी विवेकानंद की जयंती 12 जनवरी को उनके मन में कुष्ठ रोगियों की सेवा करने और उनके बच्चों की पढ़ाई लिखाई के लिए दिव्य प्रेम सेवा मिशन की स्थापना करने का विचार आया। इस तरह समिधा सेवार्थ चिकित्सालय खोलकआशीष ने रोगियो के लिए

कई सूबों के कुष्ठ रोगी

आशीष कहते है कि कुष्ठ रोगियो के बारे में कई भ्रांतियां हैं कि उनकी संतान भी कुष्ठ रोग का शिकार होती है और उनके संपर्क में आने से कोई भी इस रोग से पीड़ित हो जाता है। यह सही नहीं है। वे कहते है कि आज भी समाज का दृष्टिकोण कुष्ठ रोगियों के बारे में नफरत भरा है। इसी कारण कुष्ठ रोगी अपनी पहचान छुपाने के लिए अपना नाम, गांव, शहर, प्रदेश तक बदल देते है। हरिद्वार में ओड़ीशा, तमिलनाडु, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ, झारखंड, बिहार, बंगाल, राजस्थान तथा अन्य प्रांतों के कष्ठ रोगी रहते हैं।

बच्चों के ऊंचे सपने

वंदेमातरम कुंज में स्कूल में उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, झारखंड, छत्तीसगढ़, बिहार, पंजाब, दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, कर्नाटक और आंध्रप्रदेश समेत 14 राज्यों के बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। कक्षा दस के छात्र नितेश कहते है कि वे बैंक मैनेजर बनना चाहते हैं। कक्षा सात के अनुज कबड्डी का अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी बनना चाहते हैं। स्कूल के वार्डन उमा शंकर का कहना है कि हमारे स्कूल के बच्चे बेहद अनुशासित हैं।

स्वतंत्रता भवन के मंच पर 'चाणक्य'

मनोज जोशी निर्देशित व अभिनीत नाटक 'चाणक्य' का BHU में 1013वां मंचन

नाटक के जरिए अखंड राष्ट्र का दिया संदेश

'चाणक्य' से दिया राष्ट्रीयता का संदेश

बीएचयू के स्वतंत्रता भवन में मनोज जोशी ने साथियों संग नाटक का किया मंचन

नाटक चाणक्य के भावपूर्ण मंचन ने दर्शकों का मनोरंजन और अभिभूत भी किया

चाणक्य के किरदार को किया जीवंत

चाणक्य के इन संवादों ने खींचा लोगों का ध्यान

'चाणक्य' ने पढ़ाया अखंड भारत का पाठ

नाटक के जरिये मंच पर जीवंत हो उठा इतिहास का एक कालखंड, तीन घंटे के नाटक में बोझिल नहीं होने पाया कोई दृश्य

राष्ट्रवाद की अलख जगाएगा 'चाणक्य' : मनोज जोशी

गोरखपुर (एसएनबी)। ख्यातिलब्ध रंगकर्मी व फिल्म अभिनेता मनोज जोशी ने शुक्रवार को कहा कि उनके द्वारा देश भर में किया जा रहा ज्वलंत ऐतिहासिक हिंदी नाटक 'चाणक्य' का मंचन राष्ट्रवाद की अलख जगाएगा और लोग राष्ट्र के प्रति समर्पित होंगे।

शनिवार को एम.पी. इंटर कालेज में प्रस्तुति के लिए गोरखपुर पहुंचे ख्यातिलब्ध रंगकर्मी व फिल्म कलाकार मनोज जोशी

चाणक्य काल जैसे देश के हालात

जागरण संवाददाता, फर्रुखाबाद : प्रसिद्ध सिने अभिनेता और रंगमंच के जानेमाने कलाकार मनोज जोशी कहते हैं कि देश की परिस्थितियां इन दिनों बिल्कुल वैसी ही हैं, जैसी चाणक्य के काल में थीं। तब भी देश को अविभाजित रखते हुए आक्रांताओं से बचाने की चुनौती थी तो अब भी हालात वही हैं। चाणक्य ने ढाई हजार वर्ष पहले जो कुछ किया, एक बार फिर वही हो रहा है। उन्होंने कहा कि चाणक्य का मंचन देखने वाले आसानी से समझ सकते हैं कि वास्तव में इस दौर का चाणक्य कौन है।

चंद रोज पहले ही नेशनल एवार्ड फार फिल्म में मराठी फिल्म दशकक्रिया में सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेता के रूप में चयनित मनोज जोशी चाणक्य नाटक के मंचन के लिए अपने 18 से अधिक सहयोगियों के साथ फर्रुखाबाद आए थे। मनोज ने जागरण से बातचीत में कहा कि मंगलवार को उन्होंने चाणक्य का मंचन

वार्ता करते अभिनेता मनोज जोशी●

मिहिर भूता ने चाणक्य गुजराती में लिखा था। गुजरात के मुख्यमंत्री रहने के दौरान जब नरेंद्र मोदी ने इसका मंचन देखा तो उन्होंने हिंदी में मंचन की सलाह दी। मनोज ने बताया कि कृष्ण नीति, चाणक्य नीति और शिवाजी की नीति के संयोग से ही देश

भारतीय संस्कृति बचाने हर कोई आगे आए- राजा भैया

अमर उजाला ब्यूरो

फर्रुखाबाद।

दिव्य प्रेम सेवा मिशन की ओर से शहर के मोहल्ला आवास विकास स्थित एक होटल में ऐतिहासिक चाणक्य नाटक प्रस्तुत किया गया। इसमें कुष्ठ रोगियों की सेवा करने के लिए लोगों को प्रेरित किया गया।

कलाकार मनोज जोशी व उनकी टीम ने नाटक का मंचन किया। इस दौरान कहा गया कि कुष्ठ रोग असाध्य नहीं है। छुआछूत से कुष्ठ रोग नहीं लगता है। लोगों को इन रोगियों को परहेज नहीं करना चाहिए। बल्कि इनकी सेवा कर रोग

दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते पूर्व कैबिनेट मंत्री राजा भइया।

दिव्य प्रेम सेवा मिशन, हरिद्वार की ओर से बीएचयू के स्वतंत्रता भवन में 'चाणक्य' नाटक का तीसरी बार मंचन हुआ

आचार्य चाणक्य के ओजपूर्ण संवादों से रोमांचित हो उठे दर्शक

वाराणसी | वरिष्ठ संवाददाता

दिव्य प्रेम सेवा मिशन, हरिद्वार की ओर बीएचयू के स्वतंत्रता भवन में रविवार को देश-दुनिया में परचम लहराने वाले नाटक चाणक्य का मंचन हुआ। चर्चित अभिनेता व निर्देशक मनोज जोशी महज ने दिसम्बर में ही राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव के तहत इसी भवन में नाटक का मंचन किया था, वह भी एक बार नहीं बल्कि दो बार क्योंकि दूसरी बार

नाटक 'चाणक्य' के मंचन के दौरान एक भावपूर्ण मुद्रा में अभिनेता मनोज जोशी।

राजा नंद के अपमान के साथ वजूद में आये नाटक का भावपूर्ण मंचन हुआ। करीब दो घंटा 20 मिनट का नाटक दो भाग में प्रस्तुत किया गया। पहले भाग में सिकन्दर के भारत पर आक्रमण और पोरस के साथ युद्ध की विभीषिका का रोमहर्षक दृश्य मंचित हुआ। दूसरे भाग में पाटलिपुत्र के राजा नंद ने जब चाणक्य का अपमान किया तो उसके बाद की स्थितियों पर कलाकारों ने जीवंत प्रस्तुति दी। नंद के अपमान से आवेशित

चन्द्रगुप्त के साथ मिलकर नीति-रणनीति बनाने और महानंद की हत्याकर संकल्प पूर्ति तक की यात्रा मंचित हुई। नाटक में चाणक्य नीति से जुड़े अनेक पक्ष उभरे। जैसे चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ संवाद के दौरान चाणक्य ने कहा कि युद्ध में विजय के लिए हर नीति जायज है। महज भाग्य के भरोसे कुछ नहीं मिलता है।

इस अवसर पर पूर्व मेयर कौशलेन्द्र सिंह, जेआरएस ट्यूटोरियल्स के ओपी सिंह, विनोद

'दिव्य प्रेम' से संवरेगी कुष्ठ रोगियों की जिंदगी

आनंद मिश्रा ●फर्रुखाबाद

आम इंसान की तरह होने के बावजूद इंसानी समाज में अलग-थलग जीने को मजबूर कुष्ठ रोगियों की जिंदगी अब 'दिव्य प्रेम' से बदलेगी-संवरेगी। हरिद्वार के दिव्य प्रेम सेवा मिशन ने जिले के कुष्ठ रोगियों का कायाकल्प करने का बीड़ा उठाया है। मिशन के संस्थापक ने मंगलवार को फर्रुखाबाद पहुंचकर इस दिशा में कार्य शुरू कर दिया। कुष्ठ रोगियों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने की कवायद हो रही है। इससे न सिर्फ उनके स्वास्थ्य में सुधार होगा बल्कि उनके बच्चों का भविष्य संवरने के स्वर्णिम अवसर भी मिलेंगे।

बेशक समाज में तेजी से बदलाव हुआ है लेकिन अब भी कुष्ठ रोगियों को हेय दृष्टि से देखा जाता है। उन्हें आज भी सामाजिक स्तर पर बहिष्कृत सा रहना पड़ता है। किसी एक इलाके में ही इन्हें बसा दिया जाता है। परिजन भी कुष्ठ पीड़ितों को जल्द से जल्द घर से बाहर करने की जुगत में रहते हैं। इसी के चलते जगह-जगह कुष्ठ रोगियों के आश्रम भी संचालित होते हैं। एक मोटे अनुमान के मुताबिक, जिले में लगभग दो सौ कुष्ठ

सरोकार-स्वस्थ समाज

फर्रुखाबाद में वार्ता करते दिव्य प्रेम सेवा मिशन के संस्थापक आशीष ● जागरण

- दिव्य प्रेम मिशन ने जिले में शुरू की नि:शुल्क इलाज की कवायद
- कुष्ठ रोगियों के बच्चों के लिए भी मुफ्त आवासीय शिक्षा

के सदस्य पांचालघाट पर कुष्ठ आश्रम में जाकर वहां के लोगों को इलाज के लिए अपने साथ समिधा सेवार्थ चिकित्सालय चलने को प्रेरित करेंगे। उनके बच्चों को आवासीय शिक्षा नि:शुल्क उपलब्ध कराने

अध्यात्म

संसार रूपी भव सागर को पार करने वाला रथ ''धर्मरथ''

-श्रीमती श्रद्धा सिंह

पूज्य संत विजय कौशल महाराज जी की आवाज पूरे चक्रों को भेदती हुई सीधे सहस्त्रार पर पहुँचती है। अष्टांग योग के सभी भाग यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि रामकथा में स्वत: फलित होने लगते हैं। रामकथा में श्रोता की स्थिति को समाधि की अवस्था कह सकते हैं या तो उस परमानंद की अवस्था जहाँ मन संसार से मुक्त होकर सत् चित-आनंद की अवस्था में आ जाता है। बीच-बीच में भजन कीर्तन में महारास की अनुभूति होने लगती है।

अर्धकुम्भ पर आयोजित महाराज जी की श्रीरामकथा भक्ति योग की न होकर ज्ञान योग पर आधारित थी। इस कथा में उस ''धर्मरथ'' की व्याख्या हुई, जिस रथ से संसार सागर पार किया जा सकता है।

महाराज जी ने ज्ञान को भक्ति की चाशनी में भिगोकर नीरस को सरस कर दिया। ऐसा प्रतीत होता है सब एक ही है, भक्ति से चलो तो ज्ञान भी प्राप्त होता है। ज्ञान की अन्तिम परिणिति भक्ति के बिना अधूरी है। ध्यान करो तो स्वत: ही आसन बनने लगता है। प्राणायाम भी ध्यान में स्वत: होता है और प्राणायाम की उपलब्धि तो ध्यान ही है। सब लक्ष्य की प्राप्ति के पहले की सिद्धियाँ हैं।

धर्म का अर्थ है जीव को यह ज्ञान हो जाय कि मैं कौन हूँ ?कहाँ से आया हूँ ?मैं क्या कर रहा हूँ ?इसका ज्ञान ही धर्म है। धर्म अर्थात् विवेक धर्म का असली निवास स्थान है जीव का अन्त:करण धर्म स्थापना का अर्थ है। मनुष्य के अन्त:करण में धर्म की स्थापना करना। महाभारत के युद्ध में भगवान श्री कृष्ण और अर्जुन के संवाद से एक गीता प्रकट हुई और लंका के रणारण से भगवान श्री राम और विभीषण की वार्ता से रामायण प्रकट हुई इसीलिए कुरूक्षेत्र को धर्म क्षेत्र कहा जाता है।

ये युद्ध धर्म को प्रकट करने और धर्म को पुन: प्रस्थापित करने के लिए लड़े गये हैं, राम रावण युद्ध दो व्यक्तियों का युद्ध नहीं है, दो प्रवृत्तियों का युद्ध है। यह दो प्रवृत्तियाँ बाहर नहीं अपितु अपने भीतर हैं और अपनों से ही लड़ा जाता है। दोनों युद्धों में दोनों महापुरुषों को संदेह हुआ।

अर्जुन-'युद्ध क्यों जीता जाए'

विभीषण:-'युद्ध कैसे जीता जाए'

गीता और रामायण दोनों ही शास्त्र संशय से प्रकट हुए। संशय माने मंथन:-

मंथन से नवनीत निकलते हैं लेकिन मंथन का आधार ईश्वर होना चाहिए। संशय ईश्वर के बारे में करें या ईश्वर से करें। संसार के बारे में करेंगे या संसार से करेंगे तो कुतर्क के दलदल में फंस जायेंगे। समुद्र मंथन में भी भगवान ही आधार बने तब अमृत मिला अन्यथा तो विष ही सब को मार डालता। विभीषण को शंका हुई प्रभु आप उसे किस विधि से जीत पायेंगे क्योंकि रावण तो युद्ध के समस्त साजो सामान से सुसज्जित है और आप साधनहीन दिख रहे हैं।

रावन रथी विरथ रघुवीरा।
देखि विभीषन भयउ अधीरा।।
अधिक प्रीति मन मा संदेहा।
बंदि चरन कह सहित सनेहा।।
नाथ न रथ नहिं तन पद त्राना।
केहि विधि जितब वीर बलवाना।।

इसी संशय के निवारण में प्रभु के श्री मुख से गीता प्रकट हुई -

सुनहु सखा कह कृपा निधाना।
जेहिं जय होइ सो स्यंदन आना।।

गोस्वामी जी ने उस समय भगवान के लिए जो शब्द बोला है। वह 'कृपा निधान' है क्योंकि वे कुपित नहीं हुए, प्रेम व स्नेह से विभीषण की शंका का समाधान किया, भगवान तो कृपा और करुणा की मूर्ति हैं।

जिस रथ से संसार सागर पार किया जाय उस रथ का वर्णन-

सौरज धीरज जेहि रथ चाका।
सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका।।
बल विवेक दम परहित घोरे।
छमा कृपा समता रजु जोरे।।
ईस भजनु सारथी सुजाना।
बिरति चर्म संतोष कृपाना।।
दान परसु बुधि शक्ति प्रचंडा।
बर विग्यान कठिन को दंडा।।
अमल अचल मन त्रोन समाना।
सम अम नियम सिलीमुख नाना।।

कवच अभेद विप्र गुर पूजा।
एहि सम विजय उपाय न दूजा।।
सखा धर्ममय अस रथ जाकें।
जीतन कहं न कतहु रिपु ताकें।।

इस रथ पर सवार नहीं होना है। इस धर्मरथ को हृदय में धारण करना है। जो मन की आँखों से दिखायी देता है (वह मनुष्य की रचना है) संसार है-कल्पनाओं का जाल-संसार और-और-और की भूख, पद, प्रतिष्ठा, धन पाने की भूख जो परमात्मा की रचना है-जगत माथे की आँखों से दिखायी देता है। ईश्वर का जगत सुन्दर एवं आनंद देने वाला है। संसार रूपी जो शत्रु है उसे जीतने का रथ 'धर्मरथ' है। हम पहले संसार को समझ लें कि संसार क्या है? संसार न तो पत्नी में है न बच्चों में है न घर परिवार में है न दुकान, मकान में है। संसार हमारी कामना में है। जब तक मांग है तब तक संसार है। हमारा हृदय एक भिक्षा पात्र है। वासना मुक्त होने पर हमारी प्रार्थना धन्यवाद बन जाती है। अहो भाव बन जाती है। तब हमारी पूजा स्तुति बन जाती है। मन का अतृप्त भाव ही संसार है। यही भव सागर है जिसमें व्यक्ति डूब जाता है। भगवान ने उसी को कहा है-'**महा अजर संसार रिपु**'

सात्विक संकल्प:- भगवान कह रहे हैं हे सखा यह युद्ध साधनों से नहीं जीता जा सकता। यह तो शुद्ध संकल्प से जीता जाता है। '**क्रिया सिद्धि सत्वे भवति महतां नोपकरणे**' क्रिया की सिद्धि केवल उपकरणों से नहीं अपितु सात्विक संकल्प से होती है। संकल्प से सोई हुई ऊर्जा जाग जाती है।

सौरज धीरज जेहि रथ चाका

शौर्य का सामान्य अर्थ है कि वह वृत्ति जो अन्याय और अनीति को सहन करना भी कायरता समझती है। शौर्य मन का प्रतीक है, धैर्य बुद्धि का, मन में शौर्य भाव चाहिए बुद्धि में धैर्य दोनों का पूर्ण सामंजस्य चाहिए। कई बातें ऐसी होती हैं, जिसे बुद्धि तो मानती है पर मन नहीं मानता और जब मन चाहता है तो बुद्धि समर्थन नहीं करती। जीवन में जोश और होश दोनों चाहिए अन्यथा लोभ रूपी मन कैकेयी रूपी बुद्धि पर हावी हो जाती है। तब अवध की तरह जीवन अनाथ हो जाता है।

धर्मरथ का अर्थ है मन का रथ :-

भगवान में शौर्य भी है और धैर्य भी है लेकिन जहाँ शूरता ही शूरता होगी। वह जीव को रावण बना देगी। ऐसा व्यक्ति हमेशा लड़ने को बैचैन रहता है।

शौर्य का दूसरा अर्थ है जो अपने स्वभाव को जीत ले। विजय शौर्य स्वभाव को बदलो। हम जैसा विचार करते हैं हमारा मन तुरंत वहीं पहुंच जाता है और मन जहाँ पहुँचता है एक दिन तन भी वहीं पहुँच जाता है। जो दूसरों को जीत ले वह शौर्यवान नहीं है, अपितु जो अपने मन को जीत ले, वह शौर्यवान है। स्वभाव सत्पुरुषों के संग से बदलता है विचार शुद्ध होते हैं तो स्वभाव शुद्ध होता है। भगवान स्वभाव से पहचाने जाते हैं।

साधना में धैर्य अति आवश्यक है। प्रतीक्षा भी धैर्य का ही रूप है। आज हमारा धीरज खोता जा रहा है। इसीलिए अशांत हैं। धीरज स्वभाव के व्यक्ति कामना सौम्य हो जाते हैं, दृढ़ता और वाणी सब सौम्य हो जाते हैं।

ईश्वर के प्रति, सद्गुरू के प्रति पूर्ण समर्पण न होने पर मन में भ्रांति रहती है। उसी का परिणाम मन में अधीरता है। हम सद्गुरू को समर्पण नहीं करते अपितु समझौता करते हैं। जो बातें मनोनुकूल लगीं, वह तो मान लीं, बाकी को टाल दिया। हम भगवान को भी और गुरू को भी अपनी ही शर्तों पर स्वीकार करना चाहते हैं। ईश्वर और गुरू के प्रति पूर्ण समर्पण ही धैर्य को जन्म देता है।

'सत्यशील दृढ़ ध्वजा पताका'

सत्य और शील इस रथ की ध्वजा पताका हैं। इसका अर्थ है इस धर्म रथ का आधार शौर्य और धैर्य है, शिखर सत्य और शील है। गोस्वामी जी ने सत्य और शील के साथ दृढ़ शब्द जोड़ा है। वास्तव में रथी ऐसा चाहिए जो किसी भी कीमत पर ध्वजा को कटने न दे। शील का मतलब वाणी में व्यवहार की मधुरता। बिना शील के, सत्य भी कड़वा हो जाता है। सत्य के माधुर्य में हम अपना अहंकार मिला देते हैं। ऐसा सत्य मत बोलो जिससे किसी के प्राणों का हरण हो। आपका मौन भी आपके सत्य को उद्घाटित कर देगा। यदि किसी प्रतिष्ठित आदमी से कोई गलती हो गयी हो और आप से पूछा जाय कि आप बतायें तो मुस्करा कर मौन हो जायें। अहंकारी व्यक्ति परोपकारी नहीं होता, करुणामय नहीं होता। सीता जी ने हनुमान जी को शीलवान होने का वरदान दिया-'**बल, विवेक दम परहित घोरे**'

केवल गुण एकत्रित करना ही पर्याप्त नहीं है अपितु उन गुणों का उपयोग करना भी आना चाहिए। बुराई के विरुद्ध संघर्ष करने वाले धर्मरथ को आगे बढ़ाने के लिए जो सद्गुण हैं बल, विवेक, दम, परहित, इनके उपयोग की कला आना भी आवश्यक है। बल और बुद्धि के घोड़ों को आगे जोतते जाएं तो रथ गड्ढे में गिर जायेगा। उसे भगवान भी नहीं रोक सकते। वास्तव में बल और बुद्धि आगे नहीं होना चाहिए, आगे संयम और परोपकार होना चाहिए। परोपकार के पीछे बल और धन के पीछे विवेक लगा दिया तो रथ सुमार्ग पर चलेगा। हमारा धनबल, बाहुबल, पदबल ये सब परोपकार में लगना चाहिए।

अकेला बल रावण हो जायेगा (शील नहीं था), कुंभकरण अहंकार का प्रतीक है। बल और अहंकार दोनों मिल जाएं तो जगत में हाहाकार मच जायेगा। जहाँ किसी प्रकार की कामना न हो, तृष्णा न हो, तो वह बलवान है। जहाँ तृष्णा नहीं वहाँ कृष्णा, जहाँ कृष्णा नहीं वहाँ तृष्णा, ऐसा बल चाहिए जहाँ राग द्वेष न हो। अगर पैर खराब हों तो लक्ष्य तक नहीं पहुँचेगा। बल-परोपकार संयम का घोड़ा, घोड़ा हर समय गतिशील रहता है। मैं दुनिया में क्यों आया? मैं जा कहाँ रहा हूँ। स्पष्ट बेबाक-ज्ञान, जीवन का हर दृश्य हमें दिखायी दे।

विवेक:- व्यवहार की समझ हो, क्या बोलना है क्या नहीं बोलना है, क्या खाना है क्या नहीं खाना है। कहाँ जाना चाहिए कहाँ नहीं जाना चाहिए।

दमन:- ये नाजुक विषय दमन किसी चीज का शुभ नहीं माना जाता। शमन चाहिए। जिसका आप दमन करते हैं उसी में आप बंध जाते हैं। दिखायी देता है कि आपने गाय बांधी है लेकिन आप गाय से बंध जाते हैं। काम, क्रोध, लोभ, पाप को दबाने में ये और विकृत अवस्था में, दूसरे रास्ते से प्रकट हो जाते हैं। दमन समस्या का समाधान नहीं है। जो दमन करता है, वह पाखण्डी या पागल हो जाता है। बाहर कुछ और भीतर कुछ। बाहर का सर्टिफिकेट वही चाहता है जो पाखण्डी है, क्या कहेंगे लोग, सबसे बड़ा रोग-उमरिया सब तीरथ कर आई गई नहीं कड्डवाई।

....शेष अगले अंक में

मानव तन मन्दिर, प्रतापगढ़, उ.प्र.

समाचार परिक्रमा

दिव्य प्रेम सेवा मिशन द्वारा दिल्ली, फर्रूखाबाद, फैजाबाद, गोरखपुर एवं वाराणसी में

मनोज जोशी कृत चाणक्य नाटक का आयोजन

दिव्य प्रेम सेवा मिशन दिल्ली, फर्रूखाबाद, फैजाबाद, गोरखपुर एवं वाराणसी इकाई द्वारा मनोज जोशी कृत चाणक्य नाटक का आयोजन किया गया। चाणक्य और उसकी नीति की लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि हजारों की संख्या में इन शहरों के लोग चाणक्य नाटक का मंचन देखने पहुंचे। इतना ही नहीं बेहतरीन अभिनय, खूबसूरत मंच की साज-सज्जा और सटीक संवादों ने दर्शकों को पूरे तीन घंटा कुर्सी से बांधे रखा। चाणक्य की दूरदर्शिता, योजनाबद्ध तरीके से कार्य का क्रियान्वयन और समर्पण को मंच पर फिल्म और टीवी कलाकार मनोज जोशी ने बखूबी दर्शकों के सामने पेश किया। पौराणिक कहानी के मंचन में आकर्षण का केन्द्र विन्दु अभिनेता मनोज जोशी ही रहे। उनके सधे अभिनय और टाइमिंग को टीवी और फिल्मों की तरह थियेटर में दर्शकों का प्यार मिला। अक्सर हास्य भूमिकाओं में गुदगुदाने वाले मनोज जोशी जब भी चाणक्य के किरदार में आते हैं तो उनका अलग ही रूप दिखता है। एक झलक पाने के लिए लोग बेताब रहे, सोशल मीडिया पर फौरन ही फोटोग्राफ अपडेट हो गई, दिव्य प्रेम सेवा मिशन की ओर से पहली बार टीम एक्टर के शो की लाइव परफार्मेस देखने को मिली। इसमें टीवी सीरियल से काफी वाहवाही बटोरने वाले मनोज जोशी के हुनर को सलाम करने के लिए शहरों का हुजूम उमड़ पड़ा।

चाणक्य नाटक के मंचन के दौरान मनोज के हर डायलॉग और एक्शन पर वहां मौजूद दर्शकों ने तालियां बजाकर उनकी कला को सराहा। नाटक में लोगों को चाणक्य के कई तरह के जलवे देखने को मिले। तीन घंटे के इस शो में लोग हर इवेंट पर कलाकरों की हौसला अफजाई करते हुए नजर आए। स्टेज डेकोरेशन से लेकर लाइटिंग और कास्ट्यूम्स इतनी जबरदस्त डिजाइन और मैनेज की गई थी कि लोग इसकी बगैर तारीफ किए नहीं रह सके। इस दौरान कलाकारों ने नाटक के जरिए यह संदेश देने की कोशिश की कि कैसे प्राचीन तक्षशिला जो शिक्षा के प्रचार और प्रसार का एक अभिन्न हिस्सा था, उसी तक्षशिला से अब भारत ही क्या पूरी दुनिया में आतंक फैलाया जा रहा है। तब के वाइस चांसलर चाणक्य ने पूरे भारत को एकजुट करने के लिए चंद्रगुप्त का कैसे इस्तेमाल किया, इसको बाखूबी दिखाया गया।

दिव्य प्रेम सेवा मिशन के तत्वावधान में मंचित नाटक अखंड भारत की भावना लोगों में जगा गया। नाटक के केंद्र में खंड-खंड भारत को अखंड करने का तक्षशिला के कुलपति का संकल्प था। संवादों में चाणक्य के सूक्ति वाक्यों का बखूबी प्रयोग कर दर्शकों को राजनीति, कूटनीति और धर्मनीति की सीख दी गई। नाटक के माध्यम से जहां लोभी राजसत्ता के खिलाफ चाणक्य के नेतृत्व में आम आदमी का विद्रोह देखने को मिला, वहीं राज प्रासादों के अंदर के सत्ता षड्यंत्र भी सामने आए।

मनोज जोशी के साथ उनकी पूरी इस टीम की मेहनत एवं सहयोग से जीवंत हुआ कथानक

मनोज जोशी	:	चाणक्य, नायक/निर्देशक	कुलदीप गौर	:	सैनिक
अशोक बांठिया	:	राक्षसाचार्य महाअमात्य	महेश परमार	:	सैनिक
संजय भाटिया	:	पुरूराज,धनपाल, पर्वतक	दिनेश शेट्टी	:	मेकप आर्टिस्ट
राजीव भारद्वाज	:	चन्द्र गुप्त मौर्य	उल्लेश काण्डहरे	:	मेकप आर्टिस्ट
सुनील शिन्दे	:	सेना अध्यक्ष, घनानन्द	गणेश गुंजाल	:	सैटिंग बैक स्टेज
दिनेश खाण्डे	:	आर्याधन	विजय गोले	:	लाइट एक्जीक्यूशन
राजन जोशी	:	धर्मज	आशुतोष आप्टे	:	सैटिंग इरेक्टर
वैदेही मोहोले	:	सुमोहा	सुनील हरावडे	:	सैटिंग बैक स्टेज
चारू जोशी	:	कटिका	मन्टू गोसांई	:	ड्रेसमैन
धर्मज जोशी	:	गोपालक	गोविन्द विश्वकर्मा	:	कास्ट्यूम अरेंजर
रूद्रा जोशी	:	म्यूजिक ऑपरेटर			

दिव्य प्रेम सेवा मिशन पूर्वी दिल्ली इकाई द्वारा चाणक्य नाटक आयोजित 09 अप्रैल 2017

प्रमुख उपस्थिति:

श्री उपेन्द्र राय जी, प्रमुख-तहलका न्यूज पोर्टल
श्री राकेश कुमार शर्मा जी, डायरेक्टर-ईपीएच
श्री जसवीर सिंह जी
श्री महेश चतुर्वेदी जी
उपाध्यक्ष-दिव्य प्रेम सेवा मिशन
श्री कैलाश गोयल जी, वरिष्ठ समाज सेवी
डॉ. अनिल त्यागी जी, अध्यक्ष-नोएडा इकाई
श्री प्रदीप शर्मा जी
वरिष्ठ अधिवक्ता-हाईकोर्ट दिल्ली
श्री राज कुशवाह जी
श्री दिलीप विन्दल जी
श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी

कार्यक्रम संयोजक:-

श्री चन्द्रप्रकाश चौहान जी
डी-51 न्यू डिफेन्स कालोनी, भोपुरा
साहिवाबाद, गाजियाबाद उ.प्र.
ईमे: chanderprakashchauhan@yahoo.com
मो. 9310186747

कार्यक्रम प्रभारी:

श्री आदित्य कुशवाह जी
1071, सातवाँ तल, टावर-1 एटीएस
इन्दिरा पुरम, गाजियाबाद उ.प्र.
ईमेल: awditya@gmail.com
मो. 9717659991

दिव्य प्रेम सेवा मिशन फर्रूखाबाद इकाई द्वारा चाणक्य नाटक आयोजित 11 अप्रैल 2017

आजीवन संरक्षक :

श्री वीरेन्द्र सिंह राठौर जी, फर्रूखाबाद
डॉ. रजनी सरीन जी, फर्रूखाबाद
डॉ. सुवोध वर्मा जी, फर्रूखाबाद
श्री कुलदीप गंगवार जी (पूर्व विधायक) फर्रूखाबाद
श्री जोगेन्द्र सिंह राठौर जी, नई दिल्ली
श्री हाकिम सिंह जी, झाँसी

कार्यक्रम संयोजक:
श्री नागेन्द्र सिंह राठौर-विधायक, भोजपुर
1/227 जयनारायण वर्मा रोड, फर्रूखाबाद
ईमेल : nagendrasinghrathour2016@gmail.com
मो. : 8874695555

कार्यक्रम प्रभारी :
श्री राघवेन्द्र सिंह
EWS-135भाग-2 गंगा गंज, पनकी, कानपुर-208020
ईमेल: snsengar@gmail.com
मो. 9455305675

प्रमुख अतिथि:

श्री रघुराज प्रताप सिंह ''राजा भैया'' विधायक-कुण्डा
श्री टी.सी. मल्होत्रा जी, ब्रिगेडियर राजपूत रेजीमेन्ट
श्री आशीष गौतम जी, अध्यक्ष-दिव्य प्रेम सेवा मिशन

प्रमुख उपस्थिति :

श्री उमेश निगम जी, कानपुर
श्री के.के.सिंह जी
डॉ. सुनील सिंह भदौरिया जी
श्री शिवराज सिंह जी
श्री भूपेश अग्रवाल जी
श्री रोहित जी
श्री अजमेर सिंह जी, फतेहपुर
श्री गंगा सिंह जी, लखीमपुर
श्री विद्याराम पाण्डेय जी, एटा

प्रमुख कार्यकर्ता:

श्री जोगेन्द्र सिंह जी
श्री प्रदीप सिंह जी
श्री विजय सिंह जी
श्री जयवीर सिंह चौहान जी
श्री देवेश चन्देल जी
श्री अनिल तिवारी जी
श्री राकेश सिंह जी
श्री सौरभ सिंह जी
श्री रवि शंकर जी
श्री वीरेन्द्र सिंह राठौर जी

दिव्य प्रेम सेवा मिशन फैजाबाद इकाई द्वारा चाणक्य नाटक आयोजित 13 अप्रैल 2017

कार्यक्रम प्रभारी:
श्री दीपक वार्ष्णेय जी

प्रमुख अतिथि:
मा. राजा जय प्रताप सिंह जी
आबकारी मंत्री उ.प्र. सरकार
श्री आर.पी.एन. सिंह जी
समाजसेवी, फैजाबाद
श्री आशीष गौतम जी
अध्यक्ष-दिव्य प्रेम सेवा मिशन
श्री विरेन्द्र सिंह जी
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, लखनऊ

कार्यक्रम आयोजक:
श्री गोरखनाथ बाबा जी
विधायक
फैजाबाद (उत्तर प्रदेश)
मो.-9919888880
8030888880

कार्यक्रम संयोजक:
श्री हर्षवर्धन सिंह जी
6/13/67 चन्देल भवन, देवा हास्पिटल के सामने,
देवकली रोड, फैजाबाद-224001
मो.-9236158003
ईमेल: harshvardhanbjp@gmail.com

दिव्य प्रेम सेवा मिशन गोरखपुर इकाई द्वारा चाणक्य नाटक आयोजित 15 अप्रैल 2017

आजीवन संरक्षक

श्री शैलेश त्यागी जी, गाजियाबाद
श्री बजरंगी सिंह जी
श्री अवधेश कुमार श्रीवास्तव जी
श्री विकास केजरीवाल जी
श्री जुगुल किशोर जी, श्री सीताराम जायसवाल जी
संस्कृति पब्लिक संस्थान

संयोजक:
श्री अजय कुमार सिंह जी 'टप्पू भैया'
होटल अवन्तिका
मोहद्दीपुर चौराहा, गोरखपुर
ईमेल : hotelavantika@gmail.com
मो. : 9415210967

कार्यक्रम प्रभारी:
श्री कामेश्वर सिंह जी
होटल अवन्तिका, मोहद्दीपुर चौराहा, गोरखपुर
ईमेल : k.singhbjp@gmail.com
मो. : 9415212035, 8874422222

प्रमुख उपस्थिति:

श्री हृदयनारायण दीक्षित जी, उ.प्र.विधानसभा अध्यक्ष
प्रो. सुरेंद्र नाथ द्विवेदी जी, उपकुलपति-बुंदेलखंड विश्वविद्यालय
मा. श्री सूर्य प्रताप सिंह शाही जी, कृषिमंत्री उ.प्र.सरकार,
मा. शिव प्रताप शुक्ला जी, सांसद राज्यसभा
श्री आशीष गौतम जी, अध्यक्ष-दिव्य प्रेम सेवा मिशन
श्रीसीताराम जायसवाल जी, अध्यक्ष-गोरखपुर इकाई
श्री किशन अग्रवाल जी
मा. श्री शरद त्रिपाठी जी, सांसद
मा. श्री शीतल बाबा, विधायक
मा. श्री विपिन सिंह, विधायक
श्री मुकेश खाण्डेकर जी, प्रान्त प्रचारक
श्री युधिष्ठिर जी, विभाग प्रचारक
डॉ. धर्मेन्द्र जी, श्री उपेन्द्र शुक्ल जी
श्री अशोक जालान जी
श्री वीर सिंह जी, कानपुर
श्री अभयपाल सिंह जी, बस्ती
श्री अखण्ड प्रताप सिंह जी
श्री संतोष सिंह जी
श्री दया शंकर सिंह जी
श्री कमलनयन जी

सक्रिय कार्यकर्ता:

श्री किशन अग्रवाल जी
श्री विश्वजीत जी
श्री राजेश तिवारी जी
श्री अभिषेक सिंह जी
डॉ. सत्येन्द्र सिंह जी
श्री जनार्दन तिवारी जी
श्री प्रशांत कुमार सिंह जी
श्री हरिकेश राम त्रिपाठी जी
श्री देवेन्द्र पाल जी
श्री अवनीश दत्त पाण्डेय जी
श्री शिव सागर तिवारी जी
श्री कृष्ण पाल सिंह जी
श्री कोणार्क श्रीवास्तव जी
श्री दीपक कुमार जी
श्री राजन द्विवेदी जी
श्री शान्तु श्रीवास्तव जी
श्री आलोक सिंह जी
श्री मुकेश सिंह जी
श्री अनिल कुमार मिश्र जी
श्री अनितोष कुमार त्रिपाठी जी
श्री अच्युतानन्द शाही जी
श्री संजीव कुमार नायक जी
श्री भीष्म चौधरी जी
श्री अशोक कुमार मिश्रा जी
श्री निशांत सिंह जी
श्री गिरजेश कुमार पाल जी
डॉ. उमेश कुमार सिंह जी
श्री सुरजीत कुमार जी
श्री अभिषेक हरिसिंह जी
श्री हिमांशु कौशिक जी
डॉ. भानु प्रताप सिंह जी
श्री शशांक जायसवाल जी
श्री सौरभ तिवारी जी
श्री मनोज कुमार सिंह जी
श्री दीपेश श्रीवास्तव जी
श्री अभयनन्द त्रिपाठी जी
श्री शिवेन्द्र मिश्रा जी
श्री शशितेश भोलू जी
श्री गौरव कुमार तिवारी जी
श्री वृजेश सिंह छोटू जी
श्री मनोज कुमार सिंह जी
श्री सूर्य प्रकाश शर्मा जी
श्री आशीष गुप्ता जी
श्री विजय सिंह जी

दिव्य प्रेम सेवा मिशन वाराणसी इकाई द्वारा चाणक्य नाटक आयोजित 16 अप्रैल 2017

सेवा मण्डल सदस्य :-
श्री अन्नपूर्णा सिंह जी, वाराणसी
श्रीमती राजपूत नीरज जी, वाराणसी
श्री ओ.पी. सिंह जी, वाराणसी
श्री ए.के. झा जी, जेआरएस कोचिंग, वाराणसी
श्री कौशलेन्द्र सिंह, पूर्व नगर प्रमुख, वाराणसी

कार्यक्रम संयोजक:
डॉ. नन्दलाल सिंह जी
सचिव-युनिवर्सिटी क्लब, बीएचयू
वाराणसी
मो. 9450083618

कार्यक्रम प्रभारी:
श्री सत्य प्रकाश कौशिक जी
से.18/118 सारंग तालाब, पंचकोशी रोड
वाराणसी-221007
ईमेल: sps.enterprises@gmail.com

प्रमुख उपस्थिति : श्री के.सी. दीक्षित जी कुलपति, बीएचयू, डॉ. महेश शर्मा जी पूर्व चेयरमैन-खादी ग्रामोद्योग बोर्ड
श्री महेश चतुर्वेदी जी उपाध्यक्ष-दिव्य प्रेम सेवा मिशन, श्री जुगुल किशोर तिवारी जी-एसपी
श्री अजय प्रताप सिंह जी, श्री अवधेश दीक्षित जी, श्री राम विजय सिंह जी, डॉ. एस.पी. सिंह जी

उपेक्षित वर्ग की सेवा कर रहा है सेवा मिशन : धन सिंह रावत

उत्तराखण्ड प्रदेश के उच्च शिक्षा एवं सहकारिता मंत्री धन सिंह रावत के पहली बार सेवाकुंज पहुंचने पर दिव्य प्रेम सेवा मिशन के कार्यकर्ताओं एवं बच्चों ने तिलक व फूलमालाओं से उनका जोरदार स्वागत किया। यहाँ पहुंचने पर उन्होंने सर्व प्रथम 100 फीट ऊँचे स्थापित राष्ट्रध्वज के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलित कर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने दिव्य प्रेम सेवा मिशन द्वारा प्रकाशित पत्रिका सेवा ज्योति के पर्यावरण विशेषांक का विमोचन करते हुए कहा कि जो कार्य आशीष भैया द्वारा चण्डीघाट क्षेत्र में किया जा रहा है ऐसा कार्य बड़ी-बड़ी संस्थाएं भी नहीं कर रही हैं। उन्होंने कहा कि जिन्हें हम छूना भी पसन्द नहीं करते हैं उनकी चिकित्सा व शिक्षा का कार्य यहाँ हो रहा है। उपेक्षित वर्ग की सेवा में लगी ऐसी संस्था का समाज के सभी लोगों को आगे बढ़कर तन-मन-धन से सहयोग करना चाहिए।

इस अवसर पर सेवा मिशन के अध्यक्ष आशीष गौतम जी, संयोजक संजय चतुर्वेदी, सह संयोजक प्रशान्त खरे, मीडिया प्रभारी बालकृष्ण शास्त्री, जितेन्द्र सोमवंशी, गगन यादव, मयंक भजोराम शर्मा, संदीप गोयल, संतोष सिंह, आनन्द रिछारिया, अशोक गुप्ता, हितेश शर्मा, नरेश शर्मा, अर्पित मिश्रा, विश्वास शर्मा, विजेन्द्र पाण्डेय सहित मिशन के प्रमुख कार्यकर्ता एवं छात्र/छात्राएं उपस्थित थे।

Dinesh Patel
Candid Photographar

Mob. : 9412307304
Dineshpatelharidwar@gmail.com
Colorimage72@gmail.com

Color Image

• DSLR Cinematic Video Shooting
• Candid Shoot Arial Shoot with Drone
• Shooting With Jib Crane • Live on Big Screen LED
• HD Video Mixing • Digital Album Design

Our Work

Pre Wedding Shooting | Wedding Shooting
Pre Birthday Shooting | Industrial Photography
Candid Photography | Cinematic Shooting

First Floor, Alankar Palace, Near Shankar Ashram, Jwalapur, Haridwar

"राष्ट्रपुरूष चन्द्र शेखर-संसद में दो टूक" पुस्तक भेंट की

उत्तर प्रदेश विधान परिषद सदस्य श्री यशवंत सिंह जी ने अपनी सम्पादित पुस्तक ''राष्ट्रपुरूष चन्द्र शेखर-संसद में दो टूक'' दिव्य प्रेम सेवा मिशन के अध्यक्ष आशीष गौतम को भेंट की। उन्होंने बताया कि इस पुस्तक का विमोचन पिछले दिनों लखनऊ में मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ जी द्वारा किया गया था। इस पुस्तक में एक ऐसे समाजवादी नेता के विचार को लेखक ने वर्तमान पीढ़ी के समक्ष रखने का प्रयास किया, जिनके विचार मार्गदर्शक एवं राष्ट्रीय एकता के लिए हमेशा उपयोगी रहेंगे। उन्होंने सेवाकुंज पहुंच कर 100 फीट ऊँचे राष्ट्रध्वज के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलित कर शहीदों को नमन किया। सेवाकुंज परिसर का भ्रमण कर यहाँ चल रहे सेवा कार्यों की जानकारी प्राप्त की और कहा कि आशीष जी ने वह काम किया है जो कि दुनिया में बहुत कम लोग करते हैं। कुष्ठरोगियों एवं उनके बच्चों के लिए महान सेवा कार्य कर रहे हैं।

आशीष जी ने किया प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि केन्द्र का शुभारम्भ

प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि परियोजना के तहत प्रधानमंत्री जन औषधि केन्द्र का शुभारम्भ मानव कल्याण आश्रम, गांधी रोड कनखल में दिव्य प्रेम सेवा मिशन के अध्यक्ष आशीष गौतम जी ने किया। श्री आशीष गौतम जी ने प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि केन्द्र का शुभारम्भ करते हुए कहा कि उच्च गुण वत्ता वाली जेनरिक दवाइयों को बाजार से कम मूल्य में उपलब्ध कराने के लिए इस योजना को माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा शुरू किया गया है। जन औषधि केन्द्र खुलने से इस क्षेत्र की जनता को सस्ती एवं उच्च गुणवत्ता युक्त दवाइयां उपलब्ध होंगी। सेवा मिशन के संयोजक श्री संजय चतुर्वेदी जी ने कहा कि प्रधानमंत्री जी द्वारा सभी के लिए शुरू की गई इस योजना के अर्न्तगत नागरिकों को बाजार से 60 से 70 प्रतिशत कम कीमत पर जन औषधि केन्द्र द्वारा दवाइयां मुहैया करायी जाएंगी। उन्होंने कहा कि दिव्य प्रेम सेवा मिशन

गरीबों एवं कुष्ठरोगियों की पिछले 20 वर्षों से चिकित्सा सेवा कर रहा है। इस केन्द्र के माध्यम से उच्च गुणवत्ता की दवाइयां बाजार से बहुत कम कीमत पर प्राप्त कर जनता लाभान्वित होगी।

इस अवसर पर सह संयोजक डॉ. जितेन्द्र सिंह, प्रशान्त खरे, मीडिया प्रभारी बालकृष्ण शास्त्री, अर्पित मिश्रा, गगन यादव, एबीपी के संगठन मंत्री योगेश विद्यार्थी, मयंक भजोराम शर्मा, संदीप गोयल, बीजेपी मण्डल हरिद्वार महामंत्री श्री अनिरूद्ध भाटी, प्रदीप शर्मा, डॉ. सुषमा रावत, डॉ. पंकज चौहान, श्वेतांक त्रिपाठी, विजेन्दर पाण्डेय, विश्वास शर्मा, सुनील श्रीवास्तव, मनोहर कुमार, पुष्पा, मिथलेश शर्मा सहित मिशन के प्रमुख कार्यकर्ता उपस्थित थे।

दिव्य प्रेम सेवा मिशन
सेवा साधना के 21 वर्ष

दिव्य प्रेम सेवा मिशन, हरिद्वार
सेवा को समर्पित अध्यात्म प्रेरित स्वैच्छिक सेवा संस्थान
शुभचिन्तक सदस्यता अभियान
सेवा मिशन के 21वें वर्ष में प्रवेश पर देशभर से इक्कीस हजार
शुभचिन्तक सदस्य बनाने का संकल्प लिया गया है। जिसमें आप भी सहयोगी हो सकते हैं।
रु. 1100 देकर स्वयं सदस्य बनें और अपने परिचितों को सदस्य बनाएं।
सम्पर्क करें — 9219692776, 9451818601, 9219595552
सेवाकुञ्ज, दिव्य प्रेम सेवा मिशन न्यास
चण्डीघाट, हरिद्वार, उत्तराखण्ड, भारत—249408
ई—मेल : divyaprem03@gmail.com वेबसाइट : www.divyaprem.co.in
/divyapremsewamissionharidwar @DivyaPremSewa

पौधारोपण कर अनिल माधव दवे को दी श्रद्धांजलि

दिव्य प्रेम सेवा मिशन के कार्यकर्ताओं द्वारा केन्द्रीय पर्यावरण मंत्री अनिल माधव दवे को श्रद्धांजलि दी गयी एवं उनकी स्मृति में वृक्षारोपण किया गया। सेवा मिशन द्वारा उनकी स्मृति में ग्यारह पीपल के पौधे लगाये गये और संरक्षित करने का संकल्प भी लिया। निर्मल गंगा स्वच्छ भारत अभियान के संयोजक प्रदीप शर्मा ने कहा कि अनिल माधव दवे जी का सम्पूर्ण जीवन प्रकृति को समर्पित रहा। उन्होंने जल और पर्यावरण की रक्षा हेतु अनेक कार्यक्रम चलाये। ऐसे व्यक्ति का असमय काल का ग्रास बन जाना समाज एवं राष्ट्र की अपूरणीय क्षति है। माँ गंगा उन्हें अपने चरणों में स्थान दे तथा समाज को उनके दिखाये गये मार्ग पर चलने की प्रेरणा दे।

सेवा मिशन के मीडिया प्रभारी बालकृष्ण शास्त्री ने कहा कि वे चाहते थे कि उनकी याद में पौधे लगाए जाएं और पानी को बचाने के लिए काम किया जाए। उन्होंने अपनी वसीयत में लिखा था कि मेरी स्मृति में कोई स्मारक, प्रतियोगिता, पुरस्कार और प्रतिमा स्थापना न हो। मेरी स्मृति में अगर कोई कुछ करना चाहता है तो वो वृक्षों को लगाए और उन्हें संरक्षित करके बड़ा करे तो मुझे बड़ा आनंद होगा। इसी दिशा में सेवा मिशन ने यह पुनीत कार्य कर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दी है। इस अवसर पर सह संयोजक प्रशांत खरे, लेखाधिकारी विजेन्द्र पाण्डेय, डॉ. अनिल रावत, पवन सूरी, संतोष सिंह, अर्पित मिश्रा, गगन यादव,जितेन्द्र सोमवंशी, आनन्द रिछारिया, विश्वास शर्मा, उमा शंकर सिंह, प्रेमसिंह, मनीष तिवारी, कार्तिक, मिथलेश, मनोहर सहित मिशन कार्यकर्ता एवं छात्र/छात्राएं मौजूद थे।

With Best Compliments from :-

Contact No. : 01334-261155
9359943939

Pandey Electricals

Shop No. 1, Vadic Mohan Ashram,
Bhupatwala, Haridwar-249410, Uttarakhand

हमारी पुरानी परम्पराओं का प्रकृति संरक्षण में बहुत योगदान है

दिव्य प्रेम सेवा मिशन, जागृति ऑल इण्डिया वीमेंस कान्फ्रेंस एवं डिवाइन इण्टरनेशनल फाउण्डेशन के संयुक्त तत्वावधान में विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर पर्यावरण जागरूकता शिविर का आयोजन एवं कुम्भ क्षेत्र चण्डीघाट, हरिद्वार में पौधारोपण किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ सेवा मिशन के संयोजक संजय चतुर्वेदी, महन्त सतीश गिरि, भाजपा मण्डल अध्यक्ष अनिरूद्ध भाटी एवं मंजुला भगत ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया। डीपीएस पब्लिक स्कूल के आदित्य जोशी एवं स्वर्णिमा भारद्वाज ने मनुष्य की प्रकृति से बढ़ती दूरी को घातक बताया। उन्होंने कहा कि हमारी पुरानी परम्पराओं का प्रकृति संरक्षण में बहुत योगदान है। संजय चतुर्वेदी ने कहा कि आज हमें जो प्रकृति से मिल रहा है यह हमारे पूर्वजों द्वारा पर्यावरण संरक्षण हेतु पूर्व में किये गये कार्यों का नतीजा है। आज मानव द्वारा भौतिक साधन प्राप्ति की प्रत्याशा में प्राकृतिक तौर पर उपलब्ध संसाधनों का मनमाना दोहन किया जा रहा है। इसलिए हम कुछ ऐसा करें कि आने वाली पीढ़ी को सही परिदृश्य मिले। डीपीएस की अध्यापिका संगीता जोशी, जासमीन शर्मा एवं प्रिया शुक्ला ने भी प्रकृति व पर्यावरण के विषय में बताया कि पर्यावरण मानव मात्र का मित्र है जिसके संरक्षण से ही संसार का प्रत्येक जीव संरक्षित रहेगा।

इस अवसर पर सेवा मिशन के सह संयोजक प्रशान्त खरे, डॉ. जितेन्द्र सिंह, मीडिया प्रभारी बालकृष्ण शास्त्री, संतोष सिंह, आनन्द रिछारिया, अशोक गुप्ता, अर्पित मिश्रा, विजेन्दर पाण्डेय, विश्वास शर्मा, जितेन्द्र सोमवंशी, गगन यादव, प्रदीप शर्मा, वेगराज सिंह, आशीष झा, अश्विनी पाल, कुलदीप गुप्ता, जागृति ऑल इण्डिया वीमेंस काफ्रेंस हरिद्वार से मंजुला भगत, करूणा शर्मा, नीरू जैन, ज्योत्सना मल्होत्रा, निधि अरोडा, टीना घई, उषा रानी, मीना भारद्वाज, रजनी अरोडा, राजबाला, शैलजा, नेहा मलिक, डॉ. माधवी गोस्वामी, डॉ. अरविन्द नारायण मिश्र, संजय वर्मा, मनोज शुक्ला, विशाल गुप्ता, सचिन शर्मा, विदित शर्मा, राजेन्द्र नाथ गोस्वामी सहित मिशन के प्रमुख कार्यकर्ता एवं छात्र/छात्राएं उपस्थित थे।

सेवा मिशन द्वारा संचालित दिव्य भारत शिक्षा मन्दिर, गंगा भोगपुर तल्ला में विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर विचार गोष्ठी एवं जन जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। वन्दे मातरम् कुंज के प्रमुख विश्वास शर्मा, छात्रावास अधीक्षक उमाशंकर सिंह एवं प्रधानाचार्य राजेन्द्र राणाकोटी ने बच्चों एवं ग्रामीणों को पर्यावरण संरक्षण के विषय में जानकारी दी। इस अवसर पर अध्यापकों एवं छात्र/छात्राओं वृक्षारोपण भी किया गया।

अप्राप्य को प्राप्त करने का उपाय है योग : राजा भैया

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर दिव्य प्रेम सेवा मिशन, उत्तराखण्ड मुक्त विश्व विद्यालय अध्ययन केन्द्र स्वामी विवेकानन्द इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट द्वारा सेवा मिशन परिसर वन्दे मातरम् कुंज में योग कार्यक्रम का शुभारम्भ उ.प्र. सरकार के पूर्व कैबिनेट मंत्री एवं कुण्डा के विधायक रघुराज प्रताप सिंह 'राजा भैया', दिव्य प्रेम सेवा मिशन के अध्यक्ष आशीष गौतम जी एवं संयोजक संजय चतुर्वेदी ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। दिव्य प्रेम सेवा मिशन द्वारा पालित कुष्ठरोगियों के बालक/बालिकाओं तथा ग्रामीण जनों के साथ-साथ उ.मु.वि. के छात्र/छात्राओं द्वारा पश्चिमोत्तान आसन, गरुड़ासन, गोमुखासन, अर्द्धमत्स्येन्द्रासन, सूर्य नमस्कार एवं प्राणायाम किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजा भैया ने कहा कि अप्राप्य को प्राप्त करने का उपाय है योग, योगक्षेमं वहाम्यहम् की परिकल्पना को साकार करने की विधा है योग, योग के माध्यम से हम जीवन में जो भी प्राप्त करना चाहते हैं उसे प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि योग की प्राचीन परम्परा को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य जो स्वामी रामदेव ने किया है उसे विश्व योग दिवस के रूप में यूएनओ से मान्यता दिला कर सम्पूर्ण विश्व में भारत का गौरव बढ़ाने का जो कार्य आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र भाई मोदी जी ने किया है जो हम सभी के जीवन को दिशा प्रदान करेगा एवं दशा बदलने का माध्यम होगा। उन्होंने कहा कि सेवा मिशन में तो योगमय वातावरण है यहाँ आने पर सभी योगमय हो जाते हैं।

सेवा मिशन के अध्यक्ष श्री आशीष गौतम जी ने कहा कि योग हमारे प्राचीन ऋषियों की देन है जिसके माध्यम से हम सम्पूर्ण जीवन निरोगी रह सकते हैं। उन्होंने छात्र/छात्राओं को बताया कि आज के व्यस्त एवं तनावपूर्ण जीवन में योग का महत्व अधिक हो गया है। योग हमें एक स्वस्थ शरीर देता, जो स्वस्थ शरीर हमारी रोगों से लड़ने में मदद करता है। योग शरीर को लचीला, जोड़ों को मजबूत तथा मन को शान्त रखने में बहुत मददगार साबित होता है।

इस अवसर पर इन्द्रोजी राव कदम, सह संयोजक प्रशान्त खरे, डॉ. जितेन्द्र सिंह, मीडिया प्रभारी बालकृष्ण शास्त्री, विश्वास शर्मा, उमाशंकर सिंह, विजेन्द्र पाण्डेय, सुनील श्रीवास्तव, विक्रम प्रताप सिंह, सत्य प्रकाश गुप्ता, राजेन्द्र राणाकोटी प्रमुख रूप से मौजूद थे।

आगामी कार्यक्रम

दिनांक	स्थान	कार्यक्रम	द्वारा
26 अगस्त 2017	लखनऊ	तुलसीदास	पद्मश्री शेखर सेन जी
24 सितम्बर 2017	झांसी	तुलसीदास	पद्मश्री शेखर सेन जी
07 अक्टूबर 2017	कानपुर	दुर्गा	मा. हेमा मालिनी जी
12 अक्टूबर 2017	उन्नाव	चाणक्य	श्री मनोज जोशी जी
14 अक्टूबर 2017	इलाहाबाद	चाणक्य	श्री मनोज जोशी जी
15 अक्टूबर 2017	बस्ती	चाणक्य	श्री मनोज जोशी जी
28 अक्टूबर 2017	मुरादाबाद	सूरदास	पद्मश्री शेखर सेन जी

दिव्य प्रेम सेवा मिशन न्यास (रजि.)

S.No.: Date :.....

आप भी सहयोगी हो सकते हैं!

- ✦ 3,00000 रु. एक कक्ष का निर्माण ✦ 1,25000 रु. आजीवन संरक्षक
- ✦ 51,000 रु. सेवा मण्डल सदस्य के रूप में ✦ 25,000 रु. वार्षिक एक बालिका का संरक्षकत्व
- ✦ 21,000 रु. वार्षिक एक बालक का संरक्षकत्व ✦ 5100 रु. देकर सामान्य सदस्य के रूप में
- ✦ केन्द्रीय संचालन समिति के सदस्य के रूप में अपने परिचितों से मिशन के सेवा कार्य हेतु कम से कम 1 लाख रुपये का सहयोग कराकर

मांगलिक अक्षय निधि (अन्न क्षेत्र)

अक्षय निधि (यह राशि जीवन में एक ही बार देनी होगी) सहयोगियों को उनके द्वारा बताये गये किसी भी स्मरणीय दिवस (जन्मदिन/वर्षगांठ/पुण्यतिथि आदि) पर सेवा मिशन द्वारा प्रतिवर्ष आभार ज्ञापित किया जायेगा।
✦ 31,000 रुपए पूर्ण दिवस आहार ✦ 21,000 रुपए भोजन दोपहर या रात्रि ✦ 11000 रुपए अल्पाहार प्रातः काल एवं सांयकाल

नाम.....

पता.....

.....

.....

फोन : .....मोबाइल :.....

ई–मेल.....

जन्मतिथि.....विवाह तिथि.....

विशेष दिवस.....

हस्ताक्षर

बैंक विवरण
(भारत हेतु)
दिव्य प्रेम सेवा मिशन न्यास (रजि.)
खाता धारक का नाम : दिव्य प्रेम सेवा मिशन न्यास
खाता संख्या : 023901000105
RTGS Code : ICIC 0000 239
आई.सी.आई.सी.आई., ब्रांच हरिद्वार, उत्तराखण्ड

Bank's Details
(Only for other countries)
Divya Prem Sewa Mission Niyas (Reg.)
Bank's Details
A/c Name : Divya Prem Sewa Mission Niyas
A/c Number : 09431170000015
Branch Code : 0943 Under
RTGS Code : RTGS/NEFT HDFC 0000943
Bank Name : HDFC, Near Vishal Megha Mart, Ranipur More, Haridwar, India

सेवा मिशन को दी जाने वाली राशि आयकर अधिनियम 80G एवं 35AC के अधीन करमुक्त है। मनीआर्डर, चैक अथवा डिमाण्ड ड्राफ्ट "दिव्य प्रेम सेवा मिशन न्यास" (Divya Prem Sewa Mission Niyas) के नाम पर ही भेजें। सेवा मिशन विदेशी मुद्रा विनिमय अधिनियम (FCRA) में रजिस्टर्ड है।

पत्र व्यवहार का पता :
दिव्य प्रेम सेवा मिशन, सेवाकुञ्ज, चण्डीघाट, पो. कनखल, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) भारत
दूरभाष : (01334) 222211, 09837088910, 09219692776
ई–मेल : divyaprem03@gmail.com; divya_prem03@hotmail.com
वैबसाइट : www.divyaprem.co.in

'सेवाज्योति' के चाणक्य विशेषांक के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएँ

आज़ाद सिंह तोमर

प्रोपराइटर

जय माता दी एन्टरप्राईज़ेज

कार्यालय : 23, मानिक विलास कॉलोनी, पडाव, ग्वालियर

मो. : + 91-9425783431 फोन : 0715-2232138

ई-मेल : jmdazad1977@gmail.com, mangalprojects@yahoo.com

'सेवाज्योति' के चाणक्य विशेषांक के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएँ

डॉ. तेजप्रताप सिंह
संस्थापक/कुल मुख्य

डॉ. भानु प्रताप सिंह
प्रबन्धक संस्थान
मो. : 9889112311

बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रतसिया कोठी, देवरिया

(दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर से सम्बद्ध)

स्थापित वर्ष 1998

श्री बब्बन सिंह इण्टरमीडिएट कालेज

प्रभावती देवी रामपति देवी बालिका इण्टरमीडिएट कालेज

जानकी देवी बालिका लघु माध्यमिक विद्यालय

सत्य राज बाल विद्या मन्दिर

(रतसिया कोठी, देवरिया)

कैम्प कार्यालय-म.नं. 102/57 ए, रतसिया कोठी सत्यमार्ग पूर्वांचल बैंक के पीछे, मोहद्दीपुर, गोरखपुर
सम्पर्क सूत्र : 9839810088, 9415010310, 8005131648, 9839810088, 7379920806, 9792033930

दिव्य प्रेम सेवा मिशन न्यास के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक संजय चतुर्वेदी द्वारा दि हिन्दुस्तान ऑफसैट प्रिन्टर्स, आर्यनगर, ज्वालापुर हरिद्वार से मुद्रित तथा दिव्य प्रेम सेवा मिशन, सेवाकुंज, चण्डीघाट, पो.-कनखल, हरिद्वार-249408 (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित